RNI No UPHIN/2015/65982

₹10

अहर्निशं जागरणीयम् लोकहितं मम करणीयम्

समाज जागरण का शंखनाद

अवध प्रहरी

वर्ष : 12 अंक : 07 01-15 अप्रैल 2026

सती अनुसुइया

प्रेरणापुंज मातृशक्ति

सम्पादकीय

मतान्तरित हिन्दू आरक्षण के हकदार नहीं...

हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय ने अपने निर्णय में स्पष्ट किया है कि जो व्यक्ति हिन्दू, सिख या बौद्ध के अलावा किसी अन्य रिलीजन में मतान्तरित होता है, वह अनुसूचित जाति का सदस्य नहीं रहता और अनुसूचित जाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम के तहत संरक्षण का दावा नहीं कर सकता। न्यायालय ने कहा कि ईसाई रिलीजन में मतान्तरण होने से अनुसूचित जाति का दर्जा तत्काल समाप्त हो जाता है। यह फैसला एक आपराधिक मामले में आया जिसमें आन्ध्र प्रदेश के पादरी चिंथडा आनन्द ने शिकायत दर्ज करायी थी कि उन पर कई बार हमले हुए, जान से मारने की धमकियाँ दी गयीं और जातिसूचक गालियाँ दी गयीं। उन्होंने अनुसूचित जाति जनजाति अधिनियम के तहत केस किया, जिसे आन्ध्र प्रदेश उच्च न्यायालय ने यह कहते हुए खारिज कर दिया कि ईसाई रिलीजन में मतान्तरण के बाद वे अनुसूचित जाति के सदस्य नहीं रहे। उच्चतम न्यायालय ने भी उन्हें अनुसूचित जाति का नहीं माना। न्यायालय ने संविधान (अनुसूचित जाति) आदेश, 1950 का हवाला देते हुए कहा कि यह रोक पूर्णतः निरपेक्ष है और इसमें कोई अपवाद नहीं है। कोई व्यक्ति एक साथ किसी अन्य रिलीजन को अपनाते हुए अनुसूचित जाति की सदस्यता का दावा नहीं कर सकता। न्यायालय ने यह भी कहा कि अनुसूचित जाति दर्जे को निर्दिष्ट धर्मों से परे बढ़ाने के लिये न्यायिक व्याख्या नहीं बल्कि विधायी कार्रवाई की आवश्यकता होगी। इस निर्णय से उन लोगों पर लगाम लगती है जो धर्म परिवर्तन के बाद भी दोहरे लाभ- नये धर्म के अधिकार और अनुसूचित जाति के लिये आरक्षण का उपयोग करते रहे हों।

मुस्लिम और ईसाई यह दावा करते हैं कि उनके यहाँ जाति व्यवस्था नहीं है, लेकिन जब आरक्षण तथा अन्य मामलों में लाभ का प्रश्न आता है तो अपनी जाति बताने लगते हैं, जो कहीं से भी उचित नहीं है। भारतीय संविधान ने अनुसूचित जातियों और जनजातियों को आरक्षण का प्रावधान उनके ऐतिहासिक उत्पीड़न और सामाजिक बहिष्कार को ध्यान में रखते हुए दिया था। विशेष रूप से अनुसूचित जातियों के सन्दर्भ में, यह माना गया कि वे सदियों से छुआछूत और सामाजिक अपमान के शिकार रहे हैं। इसी कारण, 1950 के राष्ट्रपति आदेश के तहत अनुसूचित जाति का दर्जा प्रारम्भ में केवल हिन्दुओं तक सीमित रखा गया, जिसे बाद में सिख और बौद्ध समुदायों तक विस्तारित किया गया। परन्तु ईसाई और मुस्लिम धर्म अपनाने वाले दलितों को अब भी एससी का दर्जा नहीं मिलता, जबकि अनुसूचित जन जातियों के मामले में रिलीजन की बाध्यता नहीं है। ध्यान रहे कि आरक्षण का उद्देश्य सामाजिक और ऐतिहासिक अन्याय को दूर करना है। यदि कोई व्यक्ति ऐसे धर्म को अपनाता है, जहाँ सिद्धान्ततः जाति-आधारित भेदभाव का स्थान नहीं है, तो उसे उसी आधार पर आरक्षण देना संविधान की मूल भावना के विरुद्ध होगा। ईसाई मिशनरी एक और चाल यह चलते हैं कि अनुसूचित जाति-जनजाति के लोगों का मतान्तरण तो करा देते हैं लेकिन उनका नाम नहीं बदलते। ऐसा करके यह लोग छिपे रूप में ईसाई बने रहते हैं और हिन्दू एससी-एसटी का लाभ मारते रहते हैं। होना तो यह चाहिये कि संसद ऐसा कानून बनाये जिसमें अनुसूचित जाति, जनजाति और पिछड़ी जातियों को मिलने वाला आरक्षण केवल हिन्दुओं को ही मिले। जो रिलीजन यह दावा करते हैं कि उनके यहाँ जाति नहीं है तो उन्हें आरक्षण का लाभ क्यों मिले ? आज बड़ी संख्या में मुसलमान हिन्दू पिछड़ी जातियों और बड़ी संख्या में ईसाई अनुसूचित जाति का आरक्षण हड़प रहे हैं। इस पर संसद को कानून बना कर रोक लगानी चाहिये। मतान्तरण के बाद व्यक्ति एक नयी सामाजिक पहचान ग्रहण करता है, जिसके साथ उसके अधिकारों और कर्तव्यों में भी परिवर्तन आता है। न्यायालय ने अपने निर्णय में यह भी संकेत दिया है कि यह एक नीतिगत मामला है, जिसमें अन्तिम निर्णय संसद और केन्द्र सरकार को लेना चाहिये।। ●

समाज जागरण का शंखनाद

अवध प्रहरी

पाक्षिक

वर्ष : 12 अंक : 07

RNI. No. UPHIN/2015/65982

सम्पादक

शिवबली विश्वकर्मा

सम्पादक मण्डल

डॉ. अनूप आनन्द

सुरेश सिंह

विवेक रॉय

मृत्युंजय दीक्षित

कार्यालय

संस्कृति भवन

राजेन्द्र नगर, लखनऊ-226004

ई-मेल

avadhprahari@gmail.com

मुद्रक एवं प्रकाशक शम्भू दयाल पुरवार द्वारा भारतीय संस्कृति पुनरुत्थान समिति के लिए नूतन आफसेट, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर लखनऊ दूरभाष +91- 6389500007, 9151522252 से मुद्रित एवं संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर लखनऊ से प्रकाशित।

अनुक्रम

प्रेरणापुंज मातृशक्ति सती अनुसुइया — 04

सेवा, समर्पण और संकल्प के जीवन्त प्रतीक... — 06

युगाब्द प्रणाली ही श्रेष्ठ विकल्प — 07

राम मन्दिर में स्थापित हुआ श्रीराम यंत्र — 09

ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भर होता भारत — 10

काशी में नवसंवत्सर का भव्य स्वागत — 12

देश की सीमा पर रहने वालों की सेवा हमारा धर्म है — 13

समान नागरिक संहिता लागू करने का... — 15

कैसे करें भुनगा कीटों से आम की फसल... — 17

सुभाषित

षड् दोषाः पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता।
निद्रा तन्द्रा भयं क्रोध आलस्यं दीर्घसूत्रता।।

– महाभारत (उद्योगपर्व)

वैभव और उन्नति चाहने वाले पुरुष को नींद, तन्द्रा (ऊँघना), डर, क्रोध, आलस्य तथा दीर्घसूत्रता (कम समय लगने वाले कार्यों में अधिक समय नष्ट करना) इन छः दोषों को त्याग देना चाहिये।

सम्पर्क- 0522-4106333, 90 90 30 40 96

Scan & Subscribe

अवध प्रहरी प्रकाशन सेवा न्यास

खाता संख्या	: 02510210002360
आई एफएससी	: UCBA0000251
यूको बैंक, शाखा नाका, लखनऊ	

पत्रिका प्राप्ति के लिए सहयोग राशि

वार्षिक सदस्यता	₹ 200
12 वर्षीय सदस्यता	₹ 1000
आजीवन सदस्यता	₹ 2000

लेखक के विचारों से सम्पादक व प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।

• प्रसून 'प्रयाग'

प्रेरणापुंज मातृशक्ति सती अनुसुइया

भारतीय परम्परा में कुछ नाम ऐसे हैं, जो मात्र इतिहास या कथा का हिस्सा नहीं होते, बल्कि एक जीवित चेतना की तरह समाज के भीतर प्रवाहित होते रहते हैं। इन्हीं में सती अनुसुइया का नाम अत्यन्त श्रद्धा और गौरव के साथ लिया जाता है। अनुसुइया का जीवन एक दीपस्तम्भ की भाँति है, जो आज भी हमें सही मार्ग दिखाता है। उन्हें सामान्यतः पतिव्रता के आदर्श रूप में स्मरण किया जाता है, किन्तु यदि उनके जीवन को गहरायी से समझा जाये तो स्पष्ट होता है, कि वे केवल एक पारिवारिक आदर्श नहीं, बल्कि भारतीय चिन्तन में स्त्री-शक्ति, सन्तुलन और आत्मबल की एक ऊँची धुरी हैं। आज जब स्त्री की भूमिका, उसकी स्वतंत्रता, उसके अधिकार और उसकी पहचान को लेकर नये-नये विमर्श खड़े हो रहे हैं, तब यह आवश्यक हो जाता है, कि हम उन मूल आदर्शों की ओर भी दृष्टि डालें जहाँ स्त्री को केवल सामाजिक संरचना का एक भाग नहीं, बल्कि धर्म, सन्तुलन और सृजन की केन्द्र शक्ति माना गया था। सती अनुसुइया, जिनके नाम का अर्थ ही 'ईर्ष्या और द्वेष से मुक्त' होना हो, उनकी महानता की कल्पना करना भी किसी साधारण व्यक्ति के सामर्थ्य की बात नहीं है। उनका जीवन इसी सत्य को सहज और गहन रूप में हमारे सामने प्रस्तुत करता है। माता अनुसुइया का जीवन यह दर्शाता है कि नारी अपने आचरण और संस्कारों से समाज को दिशा दे सकती है।

त्रिदेव परीक्षा : स्त्री-शक्ति का दर्शन

पुराणों में वर्णित त्रिदेव परीक्षा का प्रसंग सती अनुसुइया के जीवन का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण आयाम प्रस्तुत करता है। यह कथा केवल चमत्कार नहीं, बल्कि एक गहन दार्शनिक संकेत है। जब ब्रह्मा, विष्णु और महेश उनकी परीक्षा लेते हैं, तब अनुसूइया अपने तपबल से उन्हें शिशु बना देती हैं। यह घटना बताती है कि स्त्री की शक्ति केवल सहनशीलता तक सीमित नहीं, बल्कि वह धर्म की रक्षा के लिये निर्णायक भी हो सकती है। भारतीय परम्परा में इसी भाव को संस्कृत में इस प्रकार व्यक्त किया गया है –

नास्ति स्त्रीसमं तेजो नास्ति स्त्रीसमं तपः।
या धारयति लोकानां सा शक्तिः परमा स्मृता।।

अर्थात् स्त्री के समान न कोई तेज है, न कोई तप। वही सम्पूर्ण लोकों को धारण करने वाली परम शक्ति है।

तपस्या, त्याग व शुचिता की प्रतीक

अनुसुइया प्रजापति कर्दम और देवहूति की पुत्री थीं। उनका विवाह महर्षि अत्रि के साथ हुआ। अत्रि ऋषि सृष्टि के सात प्रमुख ऋषियों में से एक थे। इस दाम्पत्य जीवन में अनुसुइया जी ने केवल घर-गृहस्थी नहीं सम्भाली अपितु तपस्या, त्याग और शुचिता का ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया कि समस्त लोक उन्हें सतीत्व की पराकाष्ठा मानने लगे। उनका जीवन सरल था किन्तु उसकी गहरायी अपार। आश्रम में रहते हुए वे पति की सेवा में तत्पर रहतीं, अतिथि-सत्कार करतीं और प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाये रखतीं। उनकी दिनचर्या में कोई दिखावा नहीं था। वे जानती थीं कि सच्ची नारी शक्ति बाहरी सजावट में नहीं, अपितु आन्तरिक पवित्रता में निहित है। आज के युग में जहाँ युवतियाँ भौतिक सुखों की दौड़ में नैतिक मूल्यों को भूल जाती हैं, वहाँ उनका यह जीवन हमें याद दिलाता है कि सच्ची सन्तोष की कुंजी आत्म-संयम में छिपी है।

नारी धर्म का उपदेश

श्रीरामचरितमानस में सती अनुसुइया का चित्रण मिलता है। जब भगवान राम, सीता जी और लक्ष्मण जी वनवास के दौरान माता अनुसुइया के आश्रम पहुँचे, तब सती अनुसुइया ने सीता जी को नारी धर्म का उपदेश दिया। यह उपदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना उस समय था। उन्होंने सीता जी से कहा कि नारी का सबसे बड़ा आभूषण उसका शील और पतिव्रत धर्म है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि नारी के लिए बाहरी सज्जा से अधिक महत्त्वपूर्ण उसका आचरण और विचार हैं। उन्होंने सीता जी को धैर्य, सेवा, सहनशीलता और समर्पण का महत्व समझाया। यह उपदेश केवल वैवाहिक जीवन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नारी के सन्तुलित और मर्यादित आचरण का मार्ग प्रशस्त करता है। इस संवाद में अनुसुइया जीवन के गहन सूत्र सीता जी को सौंपती हैं-

दिव्य बसन भूषन पहिराए।
जे नित नूतन अमल सुहाए॥
कह रिषिबधू सरस मृदु बानी।
नारिधर्म कछु ब्याज बखानी॥2॥

सती अनुसुइया ने सीता जी को ऐसे दिव्य वस्त्र और आभूषण पहनाये, जो नित्य-नये निर्मल और सुहावने बने रहते हैं। फिर ऋषि पत्नी उनके बहाने मधुर और कोमल वाणी से स्त्रियों के कुछ

धर्म बखान कर कहने लगीं।

मातु पिता भ्राता हितकारी।
मितप्रद सब सुनु राजकुमारी॥
अमित दानि भर्ता बयदेही।
अधम सो नारि जो सेव न तेही॥

हे राजकुमारी! सुनिये- माता, पिता, भाई सभी हित करने वाले हैं, परन्तु ये सब एक सीमा तक ही (सुख) देने वाले हैं, परन्तु हे जानकी! पति तो (मोक्ष रूप) असीम (सुख) देने वाला है। वह स्त्री अधम है, जो ऐसे पति की सेवा नहीं करती।

धीरज धर्म मित्र अरु नारी।
आपद काल परिखिअहिं चारी।।
बृद्ध रोगबस जड़ धनहीना।
अंध बधिर क्रोधी अति दीना।।

अर्थात् धैर्य, धर्म, मित्र और स्त्री- इन चारों की विपत्ति के समय ही परीक्षा होती है। वृद्ध, रोगी, मूर्ख, निर्धन, अंधा, बहरा, क्रोधी और अत्यन्त ही दीन।

ऐसेहु पति कर किएँ अपमाना।
नारि पाव जमपुर दुख नाना।
एकइ धर्म एक ब्रत नेमा।
कायँ बचन मन पति पद प्रेमा।।

अर्थात् पति का अपमान करने से स्त्री यमपुर में भाँति-भाँति के दुःख पाती है। शरीर, वचन और मन से पति के चरणों में प्रेम करना स्त्री के लिये, बस यह एक ही धर्म है, एक ही व्रत है और एक ही नियम है।

भारतीय दर्शन का सार

सती अनुसुइया को त्रिदेवों की माता कहा जाना केवल एक धार्मिक भाव नहीं, बल्कि भारतीय दर्शन का सार है। यहाँ मातृत्व को जैविक सीमाओं से परे एक व्यापक चेतना के रूप में देखा गया है। इसी भाव को एक प्राचीन उक्ति में इस प्रकार कहा गया है-

माता निर्मात्री भवति,
माता संस्कारदायिनी।
माता धर्मस्य मूलं हि,
माता लोकस्य धारिणी।।

अर्थात् माता ही सृजन करती है, वही संस्कार देती है, वही धर्म की जड़ है और वही संसार को धारण करती है। अनुसुइया इस मातृत्व की सर्वोच्च अभिव्यक्ति हैं। अनुसुइया की तपस्या केवल बाहरी कठोरता नहीं, बल्कि आन्तरिक अनुशासन का प्रतीक है। उनका जीवन यह सिखाता है कि सच्चा तप मन की स्थिरता, विचारों की शुद्धता और जीवन की सादगी में निहित होता है। आज के समय में, जब मनुष्य बाहरी उपलब्धियों में उलझा हुआ है, यह दृष्टि अत्यन्त प्रासंगिक हो जाती है।

गृहस्थ और साधना का सन्तुलन

सती अनुसुइया का जीवन इस तथ्य को स्थापित करता है कि आध्यात्मिकता और गृहस्थ जीवन एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं। उन्होंने अपने जीवन में दोनों का ऐसा सन्तुलन स्थापित किया, जो आज भी प्रेरणा देता है। वे एक आदर्श पत्नी, एक करुणामयी माता और एक उच्च कोटि की तपस्विनी तीनों रूपों में पूर्ण हैं। अनुसुइया केवल एक साधिका नहीं, बल्कि एक आचार्य भी थीं। उन्होंने सीता को जो जीवन-दर्शन दिया, वह केवल उस युग के लिए नहीं, बल्कि हर युग के लिये प्रासंगिक है। उनकी शिक्षा में सन्तुलन है, मर्यादा है और गहरी व्यावहारिक समझ है, जो आज भी जीवन को दिशा दे सकती है।

मातृशक्ति की भूमिका

आज का समाज जिन चुनौतियों से जूझ रहा है, परिवारों का विघटन, मानसिक अस्थिरता और मूल्यों का क्षरण हो रहा है, उनके समाधान के सूत्र अनुसुइया के जीवन में स्पष्ट दिखायी देते हैं। वे सिखाती हैं कि स्थिरता भीतर से आती है, सम्बन्ध सन्तुलन से चलते हैं और नैतिकता आचरण से स्थापित होती है। भारतीय चिन्तन में स्त्री को सदैव प्रथम शिक्षिका माना गया है। सती अनुसुइया इस विचार की जीवन्त प्रतिमा हैं। वे यह सिद्ध करती हैं कि समाज का निर्माण परिवारों से होता है, और परिवार की आत्मा मातृशक्ति में निहित होती है। भारतीय संस्कृति में नारी को मातृशक्ति कहा गया है। वह केवल एक गृहिणी नहीं, बल्कि संस्कारों की जननी है। उसके द्वारा दिये गये संस्कार ही भविष्य के समाज और राष्ट्र का निर्माण करते हैं। माता अनुसूइया की भाँति यदि मातृशक्ति अपने जीवन में शुद्धता, संयम और नैतिकता को स्थान दे, तो वह अपने परिवार को ही नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र को दिशा दे सकती है। आज आवश्यकता है कि माताएँ अपने बच्चों को केवल भौतिक सफलता की ओर प्रेरित न करें, बल्कि उन्हें नैतिक मूल्यों, संस्कारों और कर्तव्यबोध का भी शिक्षण दें। ●

शाश्वत प्रेरणा

आधुनिक युग की युवतियाँ और मातृशक्तियाँ यदि उनके आदर्शों को अपने जीवन में अपनाएँ, तो वे न केवल अपने जीवन को सफल बना सकती हैं, बल्कि समाज और राष्ट्र को भी एक नयी दिशा दे सकती हैं। जरूरी है कि हम भौतिकता की अन्धी दौड़ से ऊपर उठकर अपने मूल्यों और संस्कारों की ओर लौटें। इसके साथ ही माता अनुसुइया के जीवन आदर्श अपनी नयी पीढ़ी तक स्थानान्तरित करते रहें। सती अनुसुइया का जीवन यह सिखाता है कि सच्ची शक्ति भीतर से आती है। वह न तो प्रदर्शन करती है, न ही शोर मचाती, किन्तु उसका प्रभाव युगों तक बना रहता है। आज के समय में, जब आधुनिकता और परम्परा के बीच सन्तुलन खोजा जा रहा है, तब अनुसुइया हमें यह स्मरण कराती हैं कि हमारी जड़ें ही हमारी सबसे बड़ी शक्ति हैं। वे केवल अतीत की एक महान स्त्री नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की भी एक स्थायी प्रेरणा हैं। एक ऐसी चेतना, जो हर युग में प्रासंगिक रहेगी। आधुनिक नारी को चाहिये कि वह अपने जीवन को राष्ट्रोन्मुख बनाये। इसके लिये सामाजिक कार्यों में सक्रिय भागीदारी, शिक्षा और जागरूकता का प्रसार, नैतिक मूल्यों का संरक्षण, राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखना आदि प्रमुख हैं। आज जब भौतिकता का आकर्षण जीवन का प्रमुख लक्ष्य बनता जा रहा है, तब माता अनुसुइया का जीवन आधुनिक युवतियों और मातृशक्तियों के लिये एक सशक्त मार्गदर्शक के रूप में सामने आता है। मातृशक्ति को उनके जीवन से प्रेरणा लेकर स्वयं, परिवार एवं समाज की उन्नति में अपना योगदान देना चाहिये।

नीरज तिवारी

सेवा, समर्पण और संकल्प के जीवन्त प्रतीक हैं हनुमानजी

भगवान हनुमान जी युवाओं के लिये एक अनुपम आदर्श और प्रेरणा स्रोत हैं। वे सेवा, समर्पण, संकल्प और निःस्वार्थ भावना के जीवन्त प्रतीक हैं। रामायण में वर्णित उनके जीवन की घटनाएँ आज के युवाओं को चुनौतियों से जूझने, लक्ष्यों को प्राप्त करने और एक सार्थक जीवन जीने का मार्गदर्शन करती हैं। हनुमान जी की कथा सिखाती है कि सच्ची भक्ति, दृढ़ इच्छाशक्ति और दूसरों की सेवा से कोई भी असम्भव कार्य सम्भव हो जाता है।

समर्पण का महत्व

हनुमान जी का भगवान श्रीराम के प्रति पूर्ण समर्पण भाव अद्वितीय है। उन्होंने कभी अपनी व्यक्तिगत सुख-सुविधा, आराम या अपनी महिमा के बारे में नहीं सोचा। राम का कार्य ही उनका एकमात्र जीवन-उद्देश्य बन गया। जब राम को वनवास हुआ, तब हनुमान जी ने अपना पूरा अस्तित्व राम सेवा में समर्पित कर दिया। वे "राम दूत" कहलाने में गर्व महसूस करते थे।

आज की भागदौड़ भरी जिन्दगी में युवा अक्सर छोटी-छोटी बाधाओं और भौतिक आकर्षणों में विचलित हो जाते हैं। सामाजिक माध्यम, मनोरंजन और क्षणिक सुखों की चकाचौंध में वे अपने दीर्घकालिक लक्ष्यों से भटक जाते हैं। हनुमान जी युवाओं को सिखाते हैं कि किसी भी क्षेत्र चाहे व्यवसाय हो, शिक्षा हो या सामाजिक कार्य में पूर्ण समर्पण रखना आवश्यक है। जब समर्पण सच्चा और निष्ठापूर्ण होता है, तो अन्दर से एक अद्भुत शक्ति जागृत हो जाती है। उनकी भक्ति स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि "भक्ति से शक्ति" उत्पन्न होती है, न कि केवल शारीरिक बल से।

सेवा की भावना

हनुमान जी ने राम की सेवा में जो कुछ भी किया, समुद्र लांघना, लंका दहन करना, संजीवनी बूटी लाना और युद्ध में अपार योगदान देना सबकुछ पूर्ण निःस्वार्थ भाव से किया। वे "दास" या "सेवक" कहलाने में भी गर्व अनुभव करते थे। उनकी सेवा में कभी "मैं" का भाव नहीं आया।

आज के युवाओं के लिये यह एक महत्वपूर्ण सबक है। सच्ची सफलता अकेले व्यक्तिगत उपलब्धियों से नहीं, बल्कि दूसरों की सेवा से आती है। चाहे वह परिवार की मदद हो, समाज सेवा हो, या राष्ट्र निर्माण में योगदान हो, सेवा का भाव अपनाने से भय मिटता है, आत्मविश्वास बढ़ता है और जीवन में सन्तोष की अनुभूति होती है। हनुमान जी की प्रसिद्ध पंक्ति याद दिलाती है, "जो सुमिरै हनुमत बलबीरा, संकट कटे मिटे सब पीरा"। सेवा और भक्ति के माध्यम से हर संकट दूर हो जाता है।

संकल्प और दृढ़ता

हनुमान जी ने कभी हार नहीं मानी। समुद्र पार करना, अशोक वाटिका में सीता जी की खोज करना, लंका में रावण की सेना से मुकाबला करना, ये सभी कार्य उनके समय में असम्भव लगते थे। मगर उनके दृढ़ संकल्प, बुद्धि, शक्ति और साहस के अद्भुत सन्तुलन ने हर बाधा को पार कर दिया। वे अत्यन्त बलवान थे, फिर भी पूर्ण विनम्र थे। अहंकार उनके स्वभाव में कहीं नहीं था।

युवावस्था में असफलताएँ, विफलताएँ और बाधाएँ सामान्य हैं। पढ़ायी में, व्यवसाय में या किसी महत्वाकांक्षी लक्ष्य में बार-बार असफलता हाथ लग सकती है। हनुमान जी सिखाते हैं कि दृढ़ संकल्प और निरन्तर प्रयास से हर बाधा पार की जा सकती है। युवाओं को बाधाओं से बचकर एकाग्रता बनाये रखनी चाहिये। अपनी क्षमताओं पर अटूट विश्वास रखना चाहिये। हनुमान जी ब्रह्मचर्य, संयम और अनुशासन के भी प्रतीक हैं। ये गुण युवाओं को मानसिक और शारीरिक ऊर्जा बनाए रखने में सहायता करते हैं।

अतिरिक्त प्रेरणादायक गुण

हनुमान जी केवल शारीरिक रूप से बलवान नहीं थे, बल्कि अत्यन्त बुद्धिमान और विद्वान भी थे। उन्होंने सुग्रीव से मित्रता की, विभीषण को राम की शरण में लाया और कई जटिल परिस्थितियों में अपनी बुद्धि का उपयोग किया। युवाओं को शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ बौद्धिक विकास पर भी समान रूप से ध्यान देना चाहिये।

वे शक्तिवान होने पर भी अत्यन्त विनम्र रहे। साहस के साथ डर को जीतने का सन्देश देते हैं। उनकी निःस्वार्थता हमें सिखाती है कि फल की इच्छा किए बिना कार्य करना चाहिये। कार्य करते समय फल की चिन्ता न करें, बस अपना कर्तव्य निष्ठा से निभाएँ।

हनुमान चालीसा का नियमित पाठ युवाओं में इन गुणों को जगाने का सरल और प्रभावी माध्यम है। यह चालीसा बल, बुद्धि, साहस और कष्टों से मुक्ति प्रदान करती है।

हनुमान जी से युवाओं को यह सीख लेनी चाहिये कि सेवा, समर्पण और दृढ़ संकल्प अपनाकर जीवन की कोई भी चुनौती छोटी पड़ जाती है। जब हम सत्य, धर्म और अपने लक्ष्य (राम स्वरूप) के प्रति पूर्ण वचनबद्ध होते हैं, तो हमारी शक्ति असीम हो जाती है।

आज के युवा यदि इन आदर्शों को अपनाते हैं, तो न केवल वे व्यक्तिगत रूप से सफल और सन्तुष्ट जीवन जी पायेंगे, बल्कि अपने परिवार, समाज और पूरे राष्ट्र को भी मजबूत और समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकेंगे। हनुमान जी की तरह "राम काज करिबे को आतुर" रहने वाला युवा वर्ग ही भविष्य का भारत निर्माण कर सकता है। यही कारण है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता हनुमान कहे जाते हैं। ●

युगाब्द प्रणाली ही श्रेष्ठ विकल्प

श्रीदेव पुजारी

वर्ष प्रतिपदा भारतीय नये वर्ष का पहला दिन माना जाता है। किन्तु किस वर्ष का? कोई कहेगा शालिवाहन शक का, तो कोई विक्रम संवत का। भारत में प्रत्येक प्रदेश में अलग-अलग कालगणनाएँ प्रचलित हैं। अच्छा, तो बताइये- भगवान राम का जन्म किस वर्ष हुआ था?

राम के जन्म का समय हमें ज्ञात है- दोपहर १२ बजे, तिथि नवमी, पुनर्वसु नक्षत्र, शुक्ल पक्ष, चैत्र मास, वसन्त ऋतु, उत्तरायण। इतनी सूक्ष्म जानकारी उपलब्ध है, किन्तु वर्ष नहीं बताया जा सकता।

चलो, रहने दीजिये! राम का जन्म त्रेतायुग में हुआ था। उनके बाद द्वापरयुग में भगवान कृष्ण का जन्म हुआ। तो कृष्ण का जन्मवर्ष बताइये? कृष्ण के जन्म का समय भी ज्ञात है- मध्यरात्रि १२ बजे, तिथि अष्टमी, रोहिणी नक्षत्र, कृष्ण पक्ष, श्रावण मास, वर्षा ऋतु, दक्षिणायन। इतनी सूक्ष्म जानकारी होते हुए भी वर्ष नहीं बताया जा सकता।

इसी कारण आधुनिक इतिहासकार, जो ग्रेगोरियन कैलेण्डर का उपयोग करते हैं, राम और कृष्ण को ऐतिहासिक पुरुष नहीं मानते। जब रामसेतु का विवाद सर्वोच्च न्यायालय तक पहुँचा, तब भारत सरकार ने न्यायालय में जो शपथपत्र प्रस्तुत किया उसमें स्पष्ट लिखा था कि राम का जन्म ही नहीं हुआ इसलिये रामसेतु होने का कोई कारण नहीं है।

किन्तु भारतीय समाज इसे मानने के लिये तैयार नहीं है क्योंकि वह आज भी अयोध्या, वहाँ से लंका तक का वनगमन मार्ग, चित्रकूट, रामटेक, नासिक की पंचवटी आदि स्थान देखता है। फिर वह कैसे मान ले कि राम हुए ही नहीं?

फिर भी शिक्षण संस्थानों के पाठ्यक्रम में छात्र चुपचाप यह सीखता है कि रामायण और महाभारत मिथक हैं। वह इसका प्रतिवाद भी नहीं करता, क्योंकि जब इन महापुरुषों के काल के बारे में पूछा जाता है तो वह उत्तर नहीं दे पाता।

क्या इस प्रश्न का उत्तर ग्रेगोरियन कैलेण्डर दे सकता है? नहीं। क्योंकि बाइबिल के अनुसार पृथ्वी का अस्तित्व ईसा मसीह के जन्म से ४००४ वर्ष पहले आरम्भ हुआ। १७वीं शताब्दी में जेम्स अशर नामक आयरिश आर्चबिशप ने यह गणना प्रस्तुत की। इस प्रकार विश्व का इतिहास लगभग ६०३० वर्ष से अधिक पुराना नहीं माना जाता। किन्तु भारतीय इतिहास इससे कहीं अधिक प्राचीन है, क्योंकि इस राष्ट्र की उत्पत्ति का समय कोई निश्चित रूप से नहीं बता सकता।

तो भारतीय इतिहास को मापने के लिये कौन-सी कालगणना उपयोगी होगी? इसका उत्तर है- भारतीय ज्योतिषशास्त्र में वर्णित कालगणना। इस कालगणना का आरम्भ उस समय से माना जाता है जब ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना की। जब सृष्टि फिर से बीज रूप में विलीन हो जायेगी तब काल का अन्त होगा।

इस प्रकार भारत जैसे सनातन राष्ट्र का इतिहास इसी कालगणना के अनुसार लिखा जा सकता है। भारतीय शास्त्र का सिद्धान्त है- जो उत्पन्न होता है वह समाप्त भी होता है। ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना की, इसलिये कभी न कभी उसका नाश निश्चित है। जब ब्रह्मा का जीवन समाप्त होगा तब यह होगा। फिर दूसरा ब्रह्मा उत्पन्न होगा और पुनः बीजरूप में स्थित ब्रह्माण्ड का विस्तार होगा।

भारतीय कालगणना

यह कालगणना का उच्चारण हम विशेष पूजा, यज्ञ या विवाह के समय करते हैं, परन्तु हमें इसका अर्थ ज्ञात नहीं होता। किसी अनुष्ठान के आरम्भ में हम संकल्प करते हैं। संकल्प में पहले अपना परिचय देते हैं, फिर अनुष्ठान का उद्देश्य बताते हैं, उसके पश्चात स्थान का भूगोल बताते हैं और अन्त में समय का उल्लेख करते हैं। यही वैज्ञानिक कालगणना है।

> ### चतुर्युग (महायुग)
>
> ४,३२,००० × २ = द्वापरयुग
> ४,३२,००० × ३ = त्रेतायुग
> ४,३२,००० × ४ = सत्ययुग (कृतयुग)
>
> इस प्रकार, कलि + द्वापर + त्रेता + सत्य = १ + २ + ३ + ४ = १० × ४,३२,००० वर्ष, यानी एक महायुग बनता है।
>
> लोकमान्यता है कि सत्ययुग में धर्म के चार स्तम्भ थे, त्रेतायुग में तीन, द्वापर में दो और कलियुग में केवल एक इसलिये सत्ययुग में लोग धर्मात्मा थे और कलियुग में पाप अधिक है। परन्तु यह कथा कालगणना से सीधे सम्बन्धित नहीं है।

संकल्प में काल का भाग इस प्रकार है- "अद्य ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे, श्वेतवाराहकल्पे, सप्तमे वैवस्वतमंवन्तरे, अष्टाविंशतितमे कलियुगे, कलिप्रथमचरणे..."

कलियुग

इस गणना के अनुसार आज हम कलियुग के ५१२७वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। अर्थात ५१२७ वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। अभी भी लगभग ४,२६,८७३ वर्ष शेष हैं। (कलियुग की कुल अवधि लगभग ४,३२,००० वर्ष मानी गयी है।)

यह कलियुग वर्तमान मंवन्तर का २८वाँ कलियुग है। कलियुग का आरम्भ तब होता है जब सप्ताह के सात ग्रह (चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि और सूर्य) एक ही राशि में आ जाते हैं। ऐसी घटना फिर से होने में ४,३२,००० वर्ष लगते हैं- यही एक युग है।

वर्तमान कलियुग का आरम्भ २० फरवरी ३२०२ ईसा पूर्व, २ बजकर २७ मिनट ३० सेकण्ड पर हुआ ऐसा माना जाता है।

मंवन्तर

हमारे सौरमण्डल में सूर्य के चारों ओर घूमने वाले सात प्रमुख ग्रह हैं। ऐसे अनेक सौरमण्डल हमारी आकाशगंगा में हैं। ये सब आकाशगंगा के केन्द्र की परिक्रमा करते हैं। इस परिक्रमा पथ को परमेष्ठी मण्डल कहा जाता है।

हमारे सौरमण्डल को आकाशगंगा के केन्द्र की एक परिक्रमा करने में जितना समय लगता है, उसे एक मंवन्तर कहते हैं।

एक मंवन्तर = ७१ महायुग

वर्तमान में हम वैवस्वत मंवन्तर के

२८वें कलियुग में हैं। १४ मंवन्तरों में से यह सातवाँ मंवन्तर है।

मंवन्तर के अन्त में पृथ्वी पर प्रलय होता है।

पुराणों में वर्णित कथा के अनुसार वैवस्वत मनु सूर्यदेव के पुत्र थे। एक बार नदी में अर्घ्य देते समय उनकी हथेली में एक छोटी मछली आयी। उसने मनु से कहा - "मुझे बड़ी मछलियों से बचाइये।"

मनु ने उसे पहले छोटे पात्र में, फिर सरोवर में, फिर नदी में और अन्त में समुद्र में छोड़ दिया। वह मछली हर जगह बड़ी होती गयी और अन्त में वह बहुत बड़ी हो गयी। तब उसने अपना वास्तविक रूप बताया- वह भगवान विष्णु का मत्स्य अवतार था।

मत्स्यावतार ने मनु से कहा कि शीघ्र ही महाप्रलय होगा, इसलिये एक बड़ी नाव बनाओ और उसमें आवश्यक बीजों को सुरक्षित रखो।

प्रलय के समय जल चारों ओर फैल गया। मनु ने नाव को मत्स्य के सींग से बाँध दिया। मत्स्यावतार ने उसे सुरक्षित हिमालय के पास पहुँचा दिया।

प्रलय के बाद मनु ने नयी सृष्टि की रचना की। इसलिये वैवस्वत मनु को मानव जाति का आदिपुरुष माना जाता है।

कल्प

ब्रह्माण्ड में हमारी आकाशगंगा जैसी अनेक आकाशगंगाएँ हैं। आधुनिक विज्ञान भी इसे स्वीकार करता है। ये सभी ब्रह्माण्ड के केन्द्र की परिक्रमा करती हैं। इस परिक्रमा मार्ग को स्वायंभुव मण्डल कहा जाता है।

हमारी आकाशगंगा को ब्रह्माण्ड के केन्द्र की एक परिक्रमा करने में जितना समय लगता है उसे एक कल्प कहते हैं।

एक कल्प = १००० महायुग = १४ मंवन्तर

ब्रह्मा का आयुष्य -

ब्रह्मा का एक दिन = एक कल्प

एक रात्रि = एक कल्प

एक अहोरात्र = २ कल्प

३६० अहोरात्र = ब्रह्मा का एक वर्ष

संकल्प में कहा जाता है- "अद्य ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे"

अर्थात ब्रह्मा के ५० वर्ष पूरे हो चुके हैं और हम उनके जीवन के ५१वें वर्ष में हैं।

भारत जैसे सनातन राष्ट्र का इतिहास ग्रेगोरियन कैलेण्डर के आधार पर लिखना सम्भव नहीं है। इसके लिये भारतीय कालगणना ही उपयुक्त है।

भारतीयों को व्यक्ति केन्द्रित कालगणनाओं के पीछे न भागकर युगाब्द प्रणाली को अपनाना चाहिये। इसमें केवल यीशु ही नहीं अपितु विक्रमादित्य और शालिवाहन भी समाहित हो जाते हैं। सनातन राष्ट्र का इतिहास किसी एक व्यक्ति पर आधारित कालगणना से लिखना सम्भव नहीं है, इसलिये भारत को युगाब्द कालगणना स्वीकार करनी चाहिये।

इसी कालगणना के आधार पर "भारतीय इतिहास संकलन योजना" नामक अखिल भारतीय संगठन ने ब्रह्मा से लेकर आधुनिक काल तक की वंशावली चार फलक और एक पुस्तक में प्रकाशित की है। इसमें इक्ष्वाकु (सूर्यवंश) और यदुवंश (चन्द्रवंश) की वंशावलियाँ भी हैं। इनकी गणना के लिये कोलम्बिया विश्वविद्यालय के डॉ. आचार्य नामक विद्वान ने एक सॉफ्टवेयर विकसित किया। संस्कृत साहित्य में घटनाओं के वर्णन के समय ग्रह-नक्षत्रों का उल्लेख मिलता है। उन्हीं के आधार पर व्यक्तियों और घटनाओं का समय निर्धारित किया गया। इस लेख में वर्णित कालगणना वर्ष और उससे बड़े कालखण्डों से सम्बन्धित है। सूक्ष्म कालगणना का वर्णन किसी अन्य लेख में किया जा सकता है। ●

श्रीराम मन्दिर में स्थापित हुआ श्रीराम-यंत्र

राष्ट्रपति की उपस्थिति में कार्यक्रम सम्पन्न

अयोध्या। भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने अयोध्या के दिव्य व भव्य राम मन्दिर के दूसरे तल पर अभिजीत मुहूर्त में श्रीराम यंत्र की स्थापना की और इसकी प्रथम आरती भी उतारी। इस अवसर पर पूरा परिसर जय श्रीराम के उद्घोष, शंख ध्वनि और घण्टनाद से गुंजायमान रहा। श्रीराम यंत्र की स्थापना के समय राष्ट्रपति के साथ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ तथा राज्यपाल आनन्दी बेन पटेल भी उपस्थित रहीं।

तीन फीट चौड़ा और चार फीट लम्बा श्रीराम यंत्र स्वर्ण मण्डित है। ताम्बे से बने यंत्र का वजन 150 किलो है। सिंहासन के ऊपर जय श्रीराम लिखा है। इसमें 125 देवी-देवताओं के चित्र अंकित हैं। हैदराबाद में बने महाराष्ट्र की टीक लकड़ी के फ्रेम में यंत्र है।

श्रीराम यंत्र को आदि शंकराचार्य की चार मूल पीठों में से एक काँची कामकोटि पीठ के शंकराचार्य स्वामी विजयेन्द्र सरस्वती ने विशिष्ट अनुष्ठान के प्रतिफल के रूप में तैयार किया है। उन्होंने राम मन्दिर के लिये तैयार कर इसे गत वर्ष दिसम्बर 2024 में रथयात्रा के माध्यम से तिरुपति देवस्थानम से रामनगरी भेजा था। इस पर श्रीराम सहित अन्य देवों के 121 वैदिक एवं बीज मन्त्रों को उत्कीर्ण किया गया है। श्रीरामयंत्र की स्थापना के माध्यम से जहाँ श्रीराम मन्दिर के तीनों तलों को पूर्णता मिली तो भगवान श्रीराम व शिव तथा वैष्णवों एवं शैवों की अभिन्नता भी प्रतिपादित हुई। मौलिक अवधारणा और श्रीराम की परम्परा के अनुरूप रामयंत्र को लोक मंगलकारी और सात्विक शक्तियों के लिये शुभ माना जाता है।

ट्रस्ट के महासचिव चम्पत राय ने बताया कि जिस प्रकार जन्मकुण्डली बनायी जाती है जिसमें ग्रह नक्षत्रों की स्थिति का त्रिकोणीय रेखाचित्र होता है उसी प्रकार यह यंत्र भी वैदिक गणना व आध्यात्मिक महत्व से जुड़ा हुआ है। अब श्रीराम यंत्र का पूजन अर्चन प्रतिदिन श्रीरामलला व राम परिवार की तरह ही अर्चक करेंगे किन्तु इसका दर्शन श्रद्धालुओं को नहीं हो सकेगा।

रामराज्य की संकल्पना हो रही साकार

श्रीराम यंत्र की स्थापना के अवसर पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने विश्व शान्ति की प्रार्थना की। रामजन्मभूमि परिसर मे आयोजित समरोह में बोलते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि समानता, गरिमा और सामाजिक सद्भाव से युक्त रामराज्य के आदर्शों को भारत के विकसित राष्ट्र बनने की यात्रा में मार्गदर्शन करना चाहिये। रामराज्य की स्थापना से ही समाज समावेशी बनेगा और विकसित भारत की परिकल्पना पूर्ण होगी। गोस्वामी तुलसीदास ने श्रीरामचरित मानस में जिस रामराज्य की परिकल्पना की देश उसी दिशा मे निरन्तर आगे बढ़ रहा है। प्रभु श्रीराम के अशीर्वाद से श्रीराम मन्दिर की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। भगवान श्रीराम से कामना है कि वह सभी देशवासियों पर अपनी कृपा बनाये रखें।

राष्ट्रपति ने सप्तमण्डपम में विराजमान महर्षि वाल्मीकि, अहिल्या, शबरी और निषादराज के मन्दिरों में भी दर्शन किये और समरसता का सन्देश दिया। उन्होंने श्रीराम मन्दिर निर्माण के भूमि पूजन, श्रीरामलला की प्राण-प्रतिष्ठा, श्रीराम दरबार के दर्शन और शिखर पर ध्वजारोहण को भारतीय इतिहास और संस्कृति की स्वर्णिम तिथियाँ बताया।

राष्ट्रपति ने कहा रामराज्य में न कोई दुखी होता है, न निर्धन न ही कोई उपेक्षित यह समावेशी और न्यायपूर्ण समाज का अंग है। रामराज्य केवल आध्यात्मिक अवधारणा नहीं अपितु आर्थिक समृद्धि और सामाजिक समरसता के उच्चतम मानकों का प्रतीक है। ●

अयोध्या के कण-कण में व्याप्त है मर्यादा

राज्यपाल आनन्दी बेन ने अयोध्या के विषय मे बताते हुए कहा कि यह वह भूमि है जहाँ आस्था, श्रद्धा व सनातन संस्कृति की अनन्त धारा की जीवन्तता प्रतीत होती है, जहाँ के प्रत्येक कण में मर्यादा, धर्म व आदर्श की सुगन्ध व्याप्त है। अयोध्या आज वैश्विक चेतना का केन्द्र बन चुकी है।

भारत से ही दुनिया को जाता है समावेशी एकता का सन्देश

श्रीराम यंत्र की स्थापना के अवसर पर आध्यात्मिक गुरु माँ अमृतानन्दमयी ने कहा कि भगवान राम के जीवन से हमें प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। सर्व समावेशी एकता का सन्देश दुनिया को भारत से ही जाता है। राम एक राजा भी थे और सेनापति भी।

भयमुक्त वातावरण

मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि जब दुनिया के कई हिस्से में युद्ध अस्थिरता और भय का वातावरण है उसी समय अयोध्या से शांति, आस्था और रामराज्य का सन्देश गूँज रहा है। सरयू का पावन प्रवाह अयोध्या को निरंतर पवित्र करता है। आज यहाँ उपस्थित हजारों लोग भयमुक्त वातावरण में रामराज्य की अनुभूति कर रहे हैं।

◆ सरल शुक्ल

ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भर होता भारत

ऊर्जा किसी भी राष्ट्र की प्रगति की आधारशिला है। हम लगातार बढ़ती ऊर्जा माँग को पारम्परिक ईंधनों (कोयला, पेट्रोलियम) से पूरा करने की स्थिति में नहीं हैं, क्योंकि ये सीमित और प्रदूषित करने वाले स्रोत हैं। ऐसी परिस्थिति में ऊर्जा विविधीकरण यानी एक से अधिक ऊर्जा स्रोतों (सौर, पवन, जल, परमाणु, जैव ऊर्जा आदि) का सन्तुलित इस्तेमाल अनिवार्य हो जाता है। यह न केवल आपूर्ति को स्थिर बनाता है, बल्कि अस्थिरता या संकट की स्थिति में भी हमारे देश की ऊर्जा सुरक्षा और आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करता है। याद रहे कि आरएसएस जैसे देशभक्त चिन्तकों ने सदैव विदेशी निर्भरता छोड़कर स्वदेशी आर्थिक मॉडल अपनाने की बात कही है, और यही दृष्टिकोण ऊर्जा क्षेत्र पर भी लागू होता है।

नवीकरणीय ऊर्जा का विस्तार

भारत ने पिछले दशक में अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में अभूतपूर्व वृद्धि देखी है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार सौर ऊर्जा स्थापित क्षमता केवल 2014 में 3 GW थी, जो जनवरी 2026 तक बढ़कर 140 GW हो गयी। कुल मिलाकर गैर-जीवाश्म (नवीकरणीय+परमाणु) ऊर्जा क्षमता अब देश की कुल बिजली क्षमता का 50% से अधिक हिस्सा है। इसी तरह पवन ऊर्जा क्षमता भी लगभग 54.65 GW तक पहुँच चुकी है। हाल ही के वक्तव्य में प्रधानमंत्री ने बताया कि भारत ने 2025 तक 50% स्वच्छ ऊर्जा लक्ष्य हासिल कर लिया है, जो निर्धारित लक्ष्य से पाँच वर्ष पहले है। औपचारिक आंकड़ों से पता चलता है कि वित्त वर्ष 2024-25 में 29.52 GW नयी अक्षय क्षमता जुड़ने से कुल अक्षय ऊर्जा क्षमता 234.24 GW हो गयी। इनमें अकेले सौर (116.24 GW) और पवन (51.67 GW) की हिस्सेदारी बहुत बड़ी है। इन उपलब्धियों ने भारत को अक्षय ऊर्जा स्थापित क्षमता में दुनिया में शीर्ष पाँच पर ला दिया है (सौर में तीसरा, पवन में चौथा स्थान)।

सरकारी नीतियाँ और योजनाएँ

सरकार ने विविध ऊर्जा स्रोतों पर भारी निवेश और नीति समर्थन से ऊर्जा मिश्रण को विविध बनाने के लिये कई महत्त्वपूर्ण कदम उठाये हैं। प्रमुख प्रयासों में शामिल हैं:

सौर ऊर्जा योजनाएँ : राष्ट्रीय सोलर मिशन एवं विभिन्न कार्यक्रमों (PM Surya Ghar, छतों पर सोलर) से अब तक 23.9 लाख से अधिक घरों में रूफटॉप सोलर लग चुके हैं, जिससे लगभग 7 GW अतिरिक्त पावर क्षमता जुड़ी है। देश भर में 55 बड़े सोलर पार्क मंजूर किये गये हैं (क्षमता 40 GW)। इसके अलावा, ₹24,000 करोड़ के उत्पादन-लिंक्ड प्रोत्साहन (PLI) से घरेलू सोलर उत्पादकता और स्वदेशी विनिर्माण को बढ़ावा मिला है।

पवन ऊर्जा विकास : तमिलनाडु, गुजरात और महाराष्ट्र सहित कई राज्यों में बड़े पवन ऊर्जा परियोजनाएँ स्थापित की गयी हैं। विशेष रूप से, 2014 से अब पवन क्षमता अधिक दोगुनी होकर 51.67 GW हो चुकी है, जो प्रदूषण रहित ऊर्जा स्रोत के रूप में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

जल-विद्युत परियोजनाएँ : देश में बड़े जलाशयों से लघु एवं बड़े स्तर पर विद्युत उत्पादन जारी है। वर्तमान में कुल बड़ी जल-विद्युत क्षमता 49.62 GW और छोटी जल-विद्युत 5.10 GW है। हिमालयी राज्यों में चल रही अनेक परियोजनाएँ देश को भरोसेमन्द आपूर्ति देती हैं।

परमाणु ऊर्जा मिशन : परमाणु ऊर्जा से निरन्तर बुनियादी लोड मिलती है। सरकार ने 100 GW परमाणु ऊर्जा क्षमता (2047 तक) का लक्ष्य रखा है। एक कानूनी सुधार (SHANTI अधिनियम, 2025) के तहत निजी क्षेत्र की हिस्सेदारी को भी अनुमति देकर परमाणु ऊर्जा क्षेत्र को सक्षम बनाया जा रहा है। वर्तमान में 10 नए रिएक्टर तेजी से काम कर रहे हैं।

हरी हाइड्रोजन मिशन : जलवायु लक्ष्य के साथ ऊर्जा सुरक्षा को जोड़ने के लिए 2023 में राष्ट्रीय ग्रीन हाइड्रोजन मिशन शुरू हुआ। इसके लिये ₹19,744 करोड़ स्वीकृत किये गये हैं। इस मिशन से 2030 तक 5 MMT ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन का लक्ष्य है, जो ₹1 लाख करोड़ से अधिक परम्परागत ईंधन आयात बचत करेगा और 50 MMT कार्बन उत्सर्जन में कमी लाएगा।

ऊर्जा दक्षता उपाय : सरकार ने ऊर्जा बचत को बढ़ावा दिया है। 'उज्जाला योजना' के तहत 36.87 करोड़ LED बल्ब वितरित किये गये, जिससे लगभग 47,883 मिलियन kWh बिजली बची और प्रति वर्ष लगभग 3.88 मिलियन टन CO_2 उत्सर्जन में कमी आयी है। ग्रामीण विद्युतीकरण (DDUGJY/SAUBHAGYA) के तहत ₹1.85 लाख करोड़ से 18,374 गाँवों को बिजली मिली, 2.86 करोड़ घरों को कनेक्शन मिले, और 5.62 करोड़ स्मार्ट मीटर लगाये गये।

वैकल्पिक ईंधन और अनुसंधान : ईंधन विविधीकरण के अन्तर्गत 20% इथेनॉल ब्लेंडिंग (2025-26 तक) और जीरो-एमिशन वाहन (EV) इन्फ्रास्ट्रक्चर का निर्माण हो रहा है। 'नेशनल क्रिटिकल मिनरल्स मिशन' जैसे प्रयास भी ऊर्जा क्षेत्र के लिये आवश्यक खनिजों की घरेलू आपूर्ति मजबूत करने हेतु चल रहे हैं।

इन पहलों से स्पष्ट होता है कि सरकार ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता और विविधीकरण पर जोर

दे रही है। विदेश पर निरन्तर कम निर्भरता रखना सर्वोच्च प्राथमिकता है।

आर्थिक, पर्यावरणीय व सुरक्षा लाभ

ऊर्जा विविधीकरण के व्यापक लाभ हैं। पर्यावरण की दृष्टि से अक्षय ऊर्जा से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में भारी कमी आती है। उदाहरणतः LED बल्बों से बिजली बचत और CO_2 में कमी हुई (3.88 Mt/वर्ष)। ग्रीन हाइड्रोजन जैसी नयी तकनीकों से भी प्रदूषण कम करके स्थिरता मिल रही है। आर्थिक रूप से, नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र बड़े पैमाने पर निवेश और रोजगार का स्रोत बन रहा है। एक अध्ययन के अनुसार, 2030 तक 500 GW गैर-जीवाश्म लक्ष्य हासिल करने के लिये 238 GW सौर और 101 GW पवन स्थापित करने से कुल मिलाकर लगभग 34 लाख नये रोजगार पैदा हो सकते हैं। इसके अलावा, विविध ऊर्जा स्रोतों के कारण आयातित ईंधन पर खर्च कम होगा, विदेशी मुद्रा की बचत होगी और आर्थिक मजबूती आयेगी।

राष्ट्रीय सुरक्षा के लिहाज से भी विविधीकरण अहम है। हालिया वैश्विक संकटों (जैसे पश्चिम एशिया संघर्ष) ने दिखाया कि विदेशी ईंधन पर

निर्भरता जोखिम भरी हो सकती है। प्रधानमंत्री मोदी ने हाल ही संसद में बताया कि भारत अब तेल और गैस सहित ऊर्जा आयात 41 देशों से करता है, जबकि पहले यह केवल 27 थे। इससे आपूर्ति व्यवधान के समय भी संकट टाला जा सकता है। विदेश मंत्रालय के अनुसार ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करना 140 करोड़ भारतीयों का सर्वोच्च प्राथमिकता है, और तभी हम बदलते बाजार व भू-राजनीतिक हालात में ऊर्जा स्रोतों का विविधीकरण रणनीति बना सकते हैं।

ऊर्जा विविधीकरण का सीधा लाभ हमारे आम जनमानस और किसानों को मिल रहा है। 'पीएम कुसुम योजना' के माध्यम से आज का किसान केवल अन्नदाता ही नहीं वरन् ऊर्जादाता भी बन रहा है। बंजर जमीनों पर लगे सोलर पम्प किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने का कार्य कर रहे हैं।

आरएसएस और देशभक्त विचारकों का भी यही सन्देश रहा है कि आत्मनिर्भरता और स्वदेशी प्रगति ही राष्ट्रीय ताकत का मूलमंत्र है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का स्वदेशी दर्शन केवल वस्तुओं के निर्माण तक सीमित नहीं है। आज ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर होना ही स्वावलम्बन का सबसे बड़ा रूप है।

अपनी ही भूमि, धूप और हवा से ऊर्जा पैदा करके ही हम सही मायनों में एक आत्मनिर्भर भारत का निर्माण कर सकते हैं। प्रधानमंत्री मोदी के "वोकल फॉर लोकल" अभियान ने स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा दिया है। ऊर्जा क्षेत्र में भी यह भावना स्पष्ट है- "हर सौर मॉड्यूल, पवन टरबाइन, बायो-पेलेट और हरी हाइड्रोजन अणु भारतीय मिट्टी से आते हैं"। उनका 'एक सूर्य, एक विश्व, एक ग्रिड' का नारा हमारे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का आधुनिक रूप है। उनका पंचामृत संकल्प पर्यावरण और विकास के बीच अद्भुत सन्तुलन स्थापित करता है।

चुनौतियाँ व ध्यान देने योग्य बिन्दु

ऊर्जा विविधीकरण के बावजूद कुछ चुनौतियाँ बनी हुई हैं। नवीकरणीय स्रोतों की सबसे बड़ी समस्या उनकी अस्थिरता (मौसम पर निर्भरता) है। सौर-ऊर्जा रात में नहीं होती और पवन-ऊर्जा हवा पर निर्भर करती है। ऐसे में कुशल भण्डारण (बैटरी, पम्प्ड स्टोरेज) तकनीक विकसित करना आवश्यक है। प्रारम्भिक लागत भी ऊँची है- सौर पैनल, टर्बाइन और स्मार्ट ग्रिड के लिये भारी निवेश चाहिये। बड़े पैमाने पर परियोजनाओं के लिए पर्याप्त भूमि उपलब्ध कराना और सामाजिक स्वीकृति भी कभी-कभी चुनौतीपूर्ण होती है। इन समस्याओं को दूर करने के लिये अनुसंधान, नवाचार और वित्तीय सहयोग बढ़ाया जा रहा है।

ऊर्जा विविधीकरण भारत के आत्मनिर्भर भविष्य की एक अनिवार्य नींव है। यह नीति न केवल पर्यावरण की रक्षा करती है, बल्कि आर्थिक विकास और राष्ट्रीय सुरक्षा को भी सुदृढ़ बनाती है। स्वदेशी ऊर्जा संसाधनों को अपनाकर और नये आविष्कार करके हम नयी पीढ़ियों के लिये स्वच्छ व सस्ते ऊर्जा के रास्ते खोल रहे हैं। जैसा कि राष्ट्रीय विचारकों ने सुझाया है, हमें विदेशी निर्भरता कम कर स्वदेशी क्षमताओं को सशक्त करना है। यदि हम समय पर ठोस प्रयास जारी रखें, तो आने वाली पीढ़ियाँ स्वच्छ, सुरक्षित और आत्मनिर्भर भारत की ऊर्जा कहानी लिखेगी।

(लेखक आईआईटी हैदराबाद में एम. टेक के छात्र हैं)

काशी में नवसंवत्सर का भव्य स्वागत

वाराणसी। नवसंवत्सर विक्रम संवत 2083 के अवसर पर काशी में आस्था, परम्परा और आध्यात्म का अद्भुत संगम देखने को मिला। शहर के 300 से अधिक मठों और मन्दिरों में विशेष अनुष्ठान, वेद पाठ, यज्ञ और पूजा-अर्चना के साथ नववर्ष का भव्य स्वागत किया गया। ब्रह्म मुहूर्त से ही गंगा तटों पर श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी और पूरा वातावरण वैदिक मंत्रोच्चार से गूँज उठा।

अस्सी घाट, दशाश्वमेध घाट, केदार घाट सहित प्रमुख घाटों पर सुबह-सुबह गंगा आरती, सूर्य वन्दन और अर्घ्यदान का आयोजन हुआ। जैसे ही सूर्य की पहली किरण गंगा जल पर पड़ी, श्रद्धालुओं ने सूर्य नमस्कार कर नवसंवत्सर का अभिनन्दन किया। इस दौरान दीपदान और गंगा पूजन ने माहौल को और भी दिव्य बना दिया।

काशी के सभी 84 घाटों- अस्सी, पंचगंगा, दशाश्वमेध, राजेन्द्र प्रसाद और केदारघाट समेत सामूहिक वैदिक अनुष्ठान आयोजित हुए। विद्वान आचार्यों द्वारा वेद पाठ और मंत्रोच्चार के बीच गंगा और सूर्य की आरती की गयी। श्रद्धालुओं ने गंगा जल में आस्था की डुबकी लगाकर नये वर्ष के लिये सुख-समृद्धि और आरोग्य की कामना की।

नावों की प्रभात फेरी

आरती के उपरान्त नवसंवत्सर का सन्देश जन-जन तक पहुँचाने के लिये राजघाट से अस्सी तक नावों और बजड़ों पर प्रभात फेरी निकाली गयी। भजन-कीर्तन और शँखनाद के बीच यह यात्रा आकर्षण का केन्द्र रही। घाटों के किनारे खड़े लोगों ने पुष्पवर्षा कर इसका स्वागत किया।

इस अलौकिक दृश्य को कैमरे में कैद करने के लिये देश-विदेश से आये पर्यटकों में भी खासा उत्साह देखने को मिला। विदेशी सैलानी भारतीय संस्कृति और परम्परा की इस अनूठी झलक से अभिभूत नजर आये।

मठों और मन्दिरों में दिनभर धार्मिक कार्यक्रम, सत्संग और भण्डारे का आयोजन हुआ। इस प्रकार काशी नगरी ने नवसंवत्सर का स्वागत पूरी श्रद्धा, उल्लास और आध्यात्मिक ऊर्जा के साथ किया, जो भारतीय संस्कृति की जीवन्तता का प्रतीक बनकर उभरा।

फूलों की खेती ने बदल दिया भाग्य

लखनऊ। प्रदेश में सरकारी योजनाओं के सहयोग से किसान आधुनिक और लाभकारी खेती की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। इसी कड़ी में बाराबंकी जिले के युवा किसान नीरज पटेल ने फूलों की खेती अपनाकर आत्मनिर्भरता की नयी मिसाल पेश की है। उन्हें “राष्ट्रीय बागवानी मिशन योजना” के तहत मिली सहायता ने उनकी आय को नयी ऊँचाइयों तक पहुँचा दिया है।

पारम्परिक खेती करने वाले परिवार से आने वाले नीरज पटेल ने पढ़ायी पूरी करने के बाद कुछ अलग करने का निर्णय लिया। उद्यान विभाग के एक कार्यक्रम में उन्हें जरबेरा फूल की खेती के बारे में जानकारी मिली, जिसके बाद उन्होंने आधुनिक तकनीक के साथ इस खेती को अपनाने का मन बनाया। वर्ष 2018 में उन्हें इस योजना के तहत लगभग 29.50 लाख रुपये का ऋण मिला और बाद में 50 प्रतिशत अनुदान भी प्रदान किया गया।

सरकारी मदद से नीरज ने अपने एक एकड़ खेत में पॉलीहाउस स्थापित किया, जहाँ संरक्षित खेती के तहत करीब 25 हजार जरबेरा पौधे लगाये गये। इन पौधों की खासियत यह है कि एक बार रोपण के बाद लगभग छह वर्षों तक लगातार उत्पादन देते हैं।

जरबेरा फूलों की माँग शादियों, सजावट और विभिन्न आयोजनों में पूरे वर्ष बनी रहती है, जिससे बाजार में इसकी अच्छी कीमत मिलती है। नीरज के अनुसार, सभी खर्च निकालने के बाद उन्हें हर साल लगभग 8 से 10 लाख रुपये तक की शुद्ध आय हो रही है।

उनकी इस पहल से न केवल उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है, बल्कि आसपास के पाँच लोगों को भी रोजगार मिला है। अब नीरज अन्य किसानों को भी पारम्परिक खेती छोड़ आधुनिक तकनीकों और फूलों की खेती अपनाने के लिये प्रेरित कर रहे हैं, जिससे उनकी आय बढ़ सके और वे आत्मनिर्भर बन सकें।

‘धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः’

अर्थात धर्म से वंचित मानव और पशु में किंचित भी अन्तर नहीं है। धर्म ही हमें सच्चे और आदर्श कर्तव्य मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। इन्द्रियों का भोग तो पशु भी करते हैं किन्तु पशु किसके साथ क्या बर्ताव करना चाहिये यह नहीं जानते। मानव धर्म के कारण ही यह जानता है कि उसको माता-पिता, पत्नी, बहन तथा पुत्री के साथ क्या व्यवहार करना चाहिये। पशु अविवेक के कारण सभी वस्तुओं का आहार के रूप में उपभोग कर लेता है जबकि मानव धर्म के कारण यह विचार करता है कि उसका भोजन सात्विक होना चाहिये। जो मर्यादाओं का उल्लंघन कर सब कुछ भक्ष्य अभक्ष्य, मांस-मछली तथा अन्य अपवित्र खाद्य पदार्थ डकार जाते हैं, चाहे जिस स्त्री से भोग करने को तत्पर हो जाते हैं उनमें व पशुओं में कोई अन्तर नहीं है।

देश की सीमा पर रहने वालों की सेवा हमारा धर्म है

लखनऊ। श्री गुरु गोरखनाथ सेवा न्यास और नेशनल मेडिकोज ऑर्गनाइजेशन के तत्वाधान में हुई श्रीगुरु गोरखनाथ स्वास्थ्य यात्रा 6.0 के कार्यकर्ता सम्मान समारोह में मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह डॉ. कृष्णगोपाल जी ने कहा कि, "जब समाज के दुख को देखकर समाज खुद खड़ा हो जाये तो समझो समाज में जागृति आयी है। नेशनल मेडिकल आर्गेनाइजेशन के नाम से देशभर में जो हमारे मेडिकल कॉलेज के विद्यार्थी एवं अध्यापक कार्य कर रहे हैं, उनका संगठन, कैम्पस और उसके बाहर भी है, जिससे वे हजारों की संख्या में समाज व देश की सेवा से जुड़े हैं। देश के हर व्यक्ति को लगना चाहिये कि यह पूरा देश हमारा है। उसकी सीमाओं पर रहने वाले लोगों की सेवा हमारा धर्म है।

काशी से असम तक धनवन्तरि यात्रा

1999 में काशी के मेडिकल संस्थान की टीम ने वनवासी क्षेत्र में धनवन्तरि यात्रा में जाना शुरु किया। उसके बाद 2004 से असम में यही यात्रा शुरु हुई। वहाँ सीमावर्ती गाँवों में ट्रकों में दवाई लेकर प्रतिवर्ष जाते हैं। म्यांमार, तिब्बत, बांग्लादेश की सीमा तक चिकित्सा सुविधा हमारे सेवाभावी चिकित्सक उपलब्ध कराते हैं। आज दिल्ली तक के डॉक्टर पूर्वोत्तर में चिकित्सा सेवा के लिये जाते हैं। कई घण्टे नावों में बैठकर हमारे डॉक्टर इन दुर्गम क्षेत्रों में पहुँचते हैं।

भारतीय डॉक्टरों की वैश्विक माँग

सह सरकार्यवाह जी ने आगे कहा कि, आज भारतीय पूरे विश्व में माँग है। दुनिया के बड़े चिकित्सा संस्थानों में भारतीय चिकित्सक काम कर रहे हैं। मैं केन्या गया तो वहाँ के लोगों ने हमें भारतीय जानकर कहा कि भारत के डॉक्टर बहुत अच्छे हैं।

समाज का दिया समाज को वापस करें चिकित्सक : सतीश महाना

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विधान सभा अध्यक्ष सतीश महाना ने कहा कि, "सेवा करना किसी व्यक्ति के संसाधनों पर नहीं बल्कि भाव पर निर्भर करता है। सेवा करना भी भाग्य पर निर्भर रहता है। थारू और वनटांगिया समाज द्वारा मुख्यमंत्री, एनएमओ और गोरक्षनाथ सेवा न्यास द्वारा बड़ा काम किया जा रहा है। हमने एक डॉक्टर मित्र से कहा कि समाज ने जो तुम्हें दिया वह समाज को वापस भी करो।

आपको प्रैक्टिकल के लिये जो शव मिला होगा वह आपको बिना किसी मूल्य के मिला होगा। वह आप पर एक ऋण है जिसे वापस करना चाहिये। एक बार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्कालीन सरसंघचालक प्रो. रज्जू भैया जी ने हमसे कहा था कि सरकार समाज की सहयोगी हो सकती है लेकिन परिवर्तन समाज की जागरूकता से ही होगा। ●

राष्ट्रभक्ति सिर्फ नारों से नहीं बल्कि अपने कर्तव्यों का ईमानदारी पूर्वक निर्वहन से होती है : सीएम योगी

मुख्य अतिथि प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि, मैं सबसे पहले भारत-नेपाल की मैत्री को प्रगाढ़ करने तथा सफलतापूर्वक उसे 6 वर्षों से सुदूर क्षेत्रों में जाकर समाज को जोड़ने का काम करने वाले सभी संगठनों व स्वयंसेवी संगठन के सदस्यों का अभिनन्दन करता हूँ। हमें इस कार्यक्रम से शुरु से ही जुड़ने का अवसर मिला है। हमारे सीमावर्ती जिलों के 7 जनपदों में यह यात्रा जनजातीय समाज में जाती है। जिनको कोई नहीं पूछता उनको अपनी सेवा व संवेदना से चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराकर उनके मन को जोड़ने का काम किया है। यह राष्ट्रीय भावना का काम है। 2007-08 की घटना है कि नेपाल में कई दिनों से खूनी संघर्ष चल रहा था। तब मैंने सीमा जागरण मंच के माध्यम से जानकारी की तो पता चला कि उसमें मधेशी और माओवादी का संघर्ष चल रहा है और थारू जनजाति के लोग माओवादियों की ओर से लड़ रहे थे। तब हमने यूपी के सीमावर्ती जिलों की जानकारी पाटेश्ववरी देवी मन्दिर के महन्त से लेनी चाही तो उन्होंने हमें वहाँ आने के लिए आमंत्रित किया। वहाँ जाने पर एक कार्यक्रम में थारू समुदाय के आयोजकों ने हमें राणा प्रताप की प्रतिमा पर माल्यार्पण हेतु कहा। हमारे पूछने पर उन्होंने बताया कि हम महाराणा प्रताप के वंशज हैं तभी तो स्वाभिमान के साथ सीमावर्ती क्षेत्र में डटे हैं।

लखनऊ में पकड़ा गया अन्तरराष्ट्रीय आतंकी नेटवर्क

लखनऊ। चौधरी चरण सिंह एयर पोर्ट से छह यूक्रेनी और एक अमेरिकी नागरिक को राष्ट्रीय जाँच एजेंसी (एनआईए) और ब्यूरो ऑफ इमिग्रेशन की संयुक्त कार्रवाई में गिरफ्तार किया गया है, जो म्यांमार में जातीय समूहों को आतंकी प्रशिक्षण देने और ड्रोन जैसे हथियार उपलब्ध कराते थे। इन्हें एक होटल में भरे गये फार्म 'सी' के आधार पर पकड़ा गया।

गिरफ्तार यूक्रेनी नागरिकों की पहचान हूरबा पेट्रो, इवन सुकमोनोवस्की और स्लाईवियाक तारस के रूप में हुई है। इन्हें 13 मार्च को लखनऊ एयरपोर्ट से उस समय दबोचा गया जब वे क्वालालंपुर भागने की फिराक में थे। पूछताछ में मिली जानकारी के आधार पर बाद में दिल्ली एयरपोर्ट से तीन अन्य यूक्रेनी और कोलकाता से एक अमेरिकी नागरिक को भी गिरफ्तार किया गया।

जाँच में सामने आया कि ये सभी दिसम्बर 2025 में टूरिस्ट वीजा पर भारत आये थे और मिजोरम के रास्ते म्यांमार पहुँचे थे। वहाँ से वे गुवाहाटी के जरिये दोबारा भारत में दाखिल हुए

और बस से लखनऊ पहुँचे। लखनऊ में होटल में रुकने के दौरान उन्होंने फार्म 'सी' भरा, जिससे उनकी जानकारी तुरन्त इमिग्रेशन विभाग तक पहुँच गयी।

पहले से सतर्क इमिग्रेशन टीम ने होटल पर दबिश दी, लेकिन तब तक आरोपी एयरपोर्ट के लिये निकल चुके थे। तुरन्त अलर्ट जारी कर एयरपोर्ट पर निगरानी बढ़ायी गयी, जहाँ तीनों को अलग-अलग समय पर पकड़ लिया गया। पूछताछ के दौरान इनके अन्य साथियों की जानकारी मिली, जिसके बाद दिल्ली और कोलकाता में भी कार्रवाई की गयी।

क्या है फार्म 'सी'?

फार्म 'सी' भारत में आने वाले विदेशी नागरिकों के लिये एक अनिवार्य दस्तावेज है। जब कोई विदेशी व्यक्ति होटल, गेस्ट हाउस या किसी निजी आवास में ठहरता है, तो उस स्थान के संचालक को यह फॉर्म भरना होता है। यह प्रावधान फॉरेनर्स एक्ट 1946 के तहत आता है। इसके अनुसार, विदेशी नागरिक की पूरी जानकारी 24 घण्टे के भीतर सम्बन्धित फॉरेनर्स रीजनल रजिस्ट्रेशन ऑफिस (FRRO) को भेजना अनिवार्य होता है। फार्म 'सी' में विदेशी नागरिक का नाम, पासपोर्ट विवरण, वीजा जानकारी, भारत आने की तारीख और ठहरने का पता दर्ज किया जाता है। यह सिस्टम देश की सुरक्षा एजेंसियों को संदिग्ध गतिविधियों पर नजर रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

गंगा में नाव पर किया इफ्तार, 14 रोजाइफ्तारी भेजे गये जेल

वाराणसी। गंगा में नाव पर इफ्तार पार्टी करने के मामले में गिरफ्तार 14 युवकों की जमानत अर्जी अदालत ने खारिज कर दी। अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट अमित कुमार यादव की अदालत में सुनवाई के बाद सभी आरोपियों को 14 दिन की न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया गया। मामले की अगली सुनवाई एक अप्रैल को तय की गयी है।

पंचगंगा घाट पर हुआ था इफ्तार

आरोप है कि 16 मार्च को कोतवाली थाना क्षेत्र के पंचगंगा घाट के पास गंगा नदी में नाव पर इफ्तार पार्टी की गयी थी। बताया गया कि बिरयानी खाने के बाद उसके अवशेष गंगा में फेंके गये। इस मामले में भाजपा युवा मोर्चा के महानगर अध्यक्ष रजत जायसवाल ने वीडियो साक्ष्य के साथ प्राथमिकी दर्ज करायी थी, जिसके आधार पर पुलिस ने कार्रवाई करते हुए 14 आरोपियों को गिरफ्तार किया।

नाव संचालक के बयान से बढ़ी धाराएँ

जाँच के दौरान नाव संचालक विनोद

ने पुलिस को बताया कि आरोपियों ने उसे धमकाकर जबरन नाव गंगा में ले जाने को मजबूर किया। उसके मना करने के बावजूद आरोपियों ने दबाव बनाकर नाव को बीच धारा में ले जाकर इफ्तार पार्टी की। इस बयान के आधार पर पुलिस ने मामले में बीएनएस की धारा 308(5) सहित अन्य धाराएँ बढ़ा दीं।

सोशल मीडिया पर मिल रहीं धमकियाँ

इस मामले में प्राथमिकी दर्ज कराने वाले रजत जायसवाल को सोशल मीडिया पर गाली-गलौज और जान से मारने की धमकियाँ मिल रही हैं। उन्होंने सिगरा थाने में इसकी शिकायत दर्ज करायी है। पुलिस ने तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर जाँच शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार, आरोपियों ने नाव को अपने कब्जे में लेकर बीच गंगा में पार्टी की और उसके फोटो व वीडियो भी बनाये। मामले की गम्भीरता को देखते हुए आगे की कार्रवाई जारी है।

समान नागरिक संहिता लागू करने का समय : सर्वोच्च न्यायालय

उच्चतम न्यायालय ने कहा है कि समान नागरिक संहिता लागू करने का समय आ गया है। शीर्ष न्यायालय ने 1937 के शरिया कानून के प्रावधानों को मुस्लिम महिलाओं के साथ भेदभावपूर्ण बताते हुए इसे निरस्त करने के अनुरोध वाली याचिका पर ये टिप्पणी की। न्यायालय ने कहा कि ये बहुत अच्छा मामला है। सभी धर्मों की महिलाओं को न्याय दिलाने के लिये एक समान कानून की आवश्यकता महसूस की जा सकती है। इस पर केवल विधायिका (सरकार) को ही विचार करना चाहिये। प्रधान न्यायाधीश सूर्यकान्त, न्यायाधीश जॉयमाल्या बागची और न्यायाधीश आर. महादेवन की पीठ ने कहा कि अगर न्यायालय शरिया उत्तराधिकार कानून को निरस्त करता है, तो इससे कानून में शून्य की स्थिति उत्पन्न हो जायेगी। ऐसा इसलिये क्योंकि मुस्लिम उत्तराधिकार को निर्देशित करने वाला कोई वैधानिक कानून नहीं है।

एक पुरुष की एक पत्नी का नियम सब पर लागू नहीं

न्यायाधीश बागची ने इस बात पर जोर दिया कि एक पुरुष की एक पत्नी का नियम सभी समुदायों पर समान रूप से लागू नहीं हो रहा है। उन्होंने कहा कि क्या इसका अर्थ यह है कि न्यायालय सभी बहुविवाहों को असंवैधानिक घोषित कर सकती है? इसलिये, हमें निदेशक सिद्धान्तों को प्रभावी बनाने के लिये विधायी शक्ति का सहारा लेना होगा। उन्होंने कहा कि इस मुद्दे को विधायिका के विवेक पर छोड़ना ही सबसे अच्छा होगा। सर्वोच्च न्यायालय महिलाओं के एक समूह की ओर से दाखिल जनहित याचिका पर सुनवाई कर रहा था। इस याचिका में मुस्लिम पर्सनल लॉ (शरीयत) एक्ट, 1937 में बदलाव की माँग की गयी है, जिससे मुस्लिम महिलाओं को विरासत व उत्तराधिकार में बराबर अधिकार मिल सकें। सर्वोच्च अदालत ने कहा कि अगर पर्सनल लॉ महिलाओं को संविधान के तहत मिलने वाले बुनियादी अधिकारों से दूर रखते हैं, तो ऐसे में यूनिफॉर्म सिविल कोड पर विचार करना जरूरी हो जाता है।

मुस्लिम महिलाओं को माता-पिता की सम्पत्ति में मिलता बहुत कम हिस्सा

याचिका में कहा गया कि फिलहाल मुस्लिम महिलाओं को अपने माता-पिता की सम्पत्ति में बहुत कम हिस्सा मिलता है, जिसे बदलने की जरूरत है। शीर्ष न्यायालय ने कहा कि सभी धर्मों की महिलाओं को न्याय दिलाने के लिये एक समान कानून की जरूरत महसूस की जा सकती है। न्यायाधीश बागची ने कहा कि अगर अदालत इस क्षेत्र में सीधे दखल देती है, तो इसका असर अन्य व्यवस्थाओं पर भी पड़ सकता है। इसलिये अच्छा होगा कि इस तरह के व्यापक कानून से जुड़े फैसले सरकार पर ही छोड़ दिये जायें। ऐसा इसलिये क्योंकि न्यायालय स्वयं कानून नहीं बना सकते। सुनवाई के दौरान प्रधान न्यायाधीश सूर्यकान्त ने याचिकाकर्ताओं को याचिका में जरूरी बदलाव करने और इसे दोबारा दाखिल करने के लिये चार हफ्ते का समय दिया है। न्यायालय ने यह सुझाव भी दिया कि याचिका में इस बात पर ध्यान दिया जाये कि पीड़ित मुस्लिम महिलाओं को बराबरी का अधिकार देने के लिये क्या व्यावहारिक तरीका अपनाया जा सकता है।

एक तिहाई से अधिक सम्पत्ति का वसीयत नहीं कर सकता मुस्लिम : कोर्ट

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने मुस्लिम वसीयत कानून को लेकर एक महत्वपूर्ण फैसला सुनाते हुए स्पष्ट किया है कि कोई भी मुस्लिम व्यक्ति अपनी कुल सम्पत्ति के एक तिहाई से अधिक हिस्से की वसीयत नहीं कर सकता। यदि वसीयत किसी एक वारिस के पक्ष में की जाती है, तो वह तब तक मान्य नहीं होगी जब तक अन्य सभी कानूनी वारिस अपनी स्पष्ट सहमति न दें। यह निर्णय न्यायमूर्ति सन्दीप जैन की एकल पीठ ने कासगंज निवासी मोहम्मद मुबीन व अन्य की प्रथम अपील खारिज करते हुए दिया। अदालत ने निचली अदालत के फैसले को सही ठहराते हुए वादियों के मालिकाना हक के दावे को खारिज कर दिया।

एक तिहाई तक ही सीमित वसीयत

कोर्ट ने कहा कि मुस्लिम विधि के अनुसार वसीयत केवल सम्पत्ति के एक तिहाई हिस्से तक ही सीमित होती है। इससे अधिक हिस्से की

वसीयत तभी प्रभावी मानी जायेगी, जब सभी वारिस वसीयतकर्ता की मृत्यु के बाद स्पष्ट रूप से अपनी सहमति दें। केवल मौन सहमति को पर्याप्त नहीं माना जायेगा।

नहीं कर सकते पूरी वसीयत

अदालत ने यह भी पाया कि सम्बन्धित सम्पत्तियाँ, जैसे कोल्ड स्टोरेज और टेक्सटाइल कारोबार एकल स्वामित्व में नहीं थीं, बल्कि साझेदारी में थीं। ऐसे में वसीयतकर्ता पूरी सम्पत्ति पर अधिकार जताकर उसकी वसीयत नहीं कर सकता। यह कानूनी रूप से अमान्य माना जायेगा।

वारिसों को पक्षकार बनाना जरूरी

मामले में एक महत्वपूर्ण बिन्दु यह भी रहा कि वादियों ने अपनी माँ और बहनों को पक्षकार नहीं बनाया था। कोर्ट ने इसे गम्भीर कानूनी त्रुटि मानते हुए कहा कि मालिकाना हक के दावे में सभी वैध वारिसों को शामिल करना अनिवार्य है। इसी आधार पर वसीयत को संदिग्ध माना गया।

विवाद का पूरा मामला

मोहम्मद परवेज ने दावा किया था कि उनके पक्ष में मोहम्मद अनस और मोहम्मद इलियास ने वसीयत की थी। उन्होंने अन्य भाई-बहनों द्वारा बाहरी व्यक्तियों को बेची गयी जमीन के विक्रय विलेख को अवैध बताते हुए उसे रद्द करने की माँग की थी। हालांकि, अदालत ने उनके दावों को खारिज कर दिया।

हाथ में कलावा व कड़ा देख युवक के साथ मारपीट

कानपुर। किदवई नगर में स्कूटी और कार की मामूली टक्कर के बाद विवाद इतना बढ़ गया कि युवक की लाठी-डण्डों से बेरहमी से पिटायी कर दी गयी, वहीं चकेरी क्षेत्र में अवैध कब्जा हटाने गयी केडीए टीम पर हमला कर दिया गया।

पहली घटना किदवई नगर थाना क्षेत्र की है। जूही लाल कॉलोनी निवासी राहुल कुमार शर्मा के अनुसार, वह अपने दोस्त आकाश के साथ स्कूटी से जा रहे थे। विश्वास गार्डन के पास स्कूटी मोड़ते समय उनकी गाड़ी एक कार से टकरा गई। आरोप है कि कार सवार शमशाद, नौशाद, सरताज और एक महिला बाहर निकल आये और गाली-गलौज करने लगे। विरोध करने पर उन्होंने लाठी-डण्डों और लात-घूँसों से हमला कर दिया।

पीड़ित के मुताबिक, हमलावरों ने हाथ में कलावा और कड़ा देखकर आपत्तिजनक टिप्पणियाँ कीं और अधिक मारपीट की। इस दौरान ईंट-पत्थर भी चलाये गये, जिससे राहुल की आँख और नाक में गम्भीर चोट आयी। बीच-बचाव करने आए आकाश सचान को भी नहीं

छोड़ा गया। सूचना फैलते ही दोनों पक्षों के लोग मौके पर जुटने लगे, जिससे तनाव की स्थिति बन गयी। हालांकि समय रहते पुलिस फोर्स पहुँच गयी और हालात को काबू में कर लिया। पुलिस ने तीन नामजद समेत अन्य के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर दो आरोपियों-सरताज और शमशाद-को गिरफ्तार कर लिया है, जबकि बाकी की तलाश जारी है। दूसरी घटना चकेरी थाना क्षेत्र में हुई, जहाँ कानपुर विकास प्राधिकरण (केडीए) की टीम पर हमला किया गया। टीम गणेशपुर रोड स्थित बजरंगी गैस एजेंसी के पास अवैध कब्जा हटाने पहुंची थी। जोनल अधिकारी सुधांशु श्रीवास्तव के अनुसार, पहले जारी ध्वस्तीकरण आदेश के बावजूद कब्जाधारियों ने दोबारा निर्माण शुरू कर दिया था।

छत्तीसगढ़ में मतान्तरण करवाने वालों को होगी उम्रकैद

रायपुर। छत्तीसगढ़ में अवैध मतान्तरण पर रोक लगाने के लिये राज्य सरकार ने बड़ा कदम उठाते हुए 'छत्तीसगढ़ धर्म स्वातंत्र्य विधेयक-2026' को विधानसभा में ध्वनिमत से पारित कर दिया। इस नये कानून के तहत बलपूर्वक, प्रलोभन या धोखाधड़ी से कराये जाने वाले सामूहिक मतान्तरण के मामलों में दोषियों को आजीवन कारावास तक की सजा का प्रावधान किया गया है।

विधेयक में महिलाओं, नाबालिगों, अनुसूचित जाति-जनजाति और पिछड़ा वर्ग के लोगों के मतान्तरण को विशेष श्रेणी में रखा गया है। ऐसे मामलों में 10 से 20 वर्ष तक की सजा और न्यूनतम 10 लाख रुपये जुर्माने का प्रावधान किया गया है। वहीं सामान्य मामलों में 7 से 10 साल की जेल और कम से कम 5 लाख रुपये का जुर्माना तय किया गया है। सामूहिक मतान्तरण के मामलों में सजा 10 साल से लेकर आजीवन कारावास तक और न्यूनतम 25 लाख रुपये जुर्माना लगाया जा सकेगा।

इस कानून की खास बात यह है कि डिजिटल माध्यमों से दिये जाने वाले प्रलोभन को भी अपराध की श्रेणी में शामिल किया गया है। सभी सम्बन्धित अपराधों को संज्ञेय और गैर-जमानती बनाया गया है, जिससे पुलिस को तत्काल कार्रवाई का अधिकार मिलेगा।

छह अध्यायों और 31 बिन्दुओं में तैयार इस विधेयक में पैतृक धर्म में वापसी को मतान्तरण नहीं माना गया है। साथ ही मामलों की त्वरित सुनवाई के लिये प्रत्येक जिले में विशेष सत्र न्यायालय गठित किये जायेंगे। यह नया कानून वर्ष 1968 के पुराने धर्म स्वातंत्र्य अधिनियम की जगह लेगा। विधेयक के अनुसार, यदि कोई व्यक्ति धर्म परिवर्तन करना चाहता है तो उसे पहले अधिकृत अधिकारी को आवेदन देना होगा। इसके बाद सम्बन्धित जानकारी वेबसाइट, ग्राम पंचायत और थाने में सार्वजनिक की जाएगी तथा 30 दिनों के भीतर आपत्तियाँ और जाँच पूरी की जायेगी।

फर्जी कमाण्डेंट बनकर युवती को जाल में फंसाया

लखनऊ। सोशल मीडिया के जरिये युवती को झाँसे में लेकर धर्मान्तरण कराने की साजिश का सनसनीखेज मामला सामने आया है। बलरामपुर के तुलसीपुर निवासी सैय्यद सलामत हुसैन ने खुद को सीआरपीएफ कमाण्डेंट बताकर मध्य प्रदेश की एक युवती से दोस्ती की और उसे लखनऊ लाने के दौरान उसका भण्डाफोड़ हो गया। जीआरपी ने आरोपी को गिरफ्तार कर उसके नेटवर्क की जाँच शुरू कर दी है।

इंस्टाग्राम पर झूठी पहचान बनायी

पुलिस के मुताबिक, 19 वर्षीय युवती मध्य प्रदेश के डिंडोरी जिले की रहने वाली है। आरोपी ने इंस्टाग्राम के जरिये उससे सम्पर्क किया और खुद को सीआरपीएफ का कमाण्डेंट बताया। धीरे-धीरे विश्वास में लेकर वह उसे अपने साथ लखनऊ लाने लगा।

ट्रेन में शिकायत के बाद खुला राज

मामले का खुलासा तब हुआ जब जबलपुर से लखनऊ आ रही चित्रकूट एक्सप्रेस में युवती से छेड़छाड़ की शिकायत रेलवे कंट्रोल रूम तक पहुँची। जीआरपी और आरपीएफ की टीम ने जाँच शुरू की। इसी दौरान सलामत पर संदेह हुआ और उससे पूछताछ की गयी।

कड़ाई से पूछताछ में कबूला सच

पुलिस की सख्ती के आगे आरोपी टूट गया और स्वीकार किया कि वह सीआरपीएफ कमाण्डेंट नहीं है। उसने युवती को धोखे में रखकर उसका धर्मान्तरण कराने और उससे पैसे ऐंठने की योजना बनायी थी। पूछताछ में यह भी सामने आया कि उसकी युवती पर गलत नजर थी और वह उसे लखनऊ से बलरामपुर ले जाने की फिराक में था।

आरोपी ने खुलासा किया कि दो साल पहले पीलीभीत में भी उसने एक युवती को इसी तरह फंसाने की कोशिश की थी। उस मामले में उसके खिलाफ एफआईआर दर्ज हुई थी।

कैसे करें भुनगा कीटों से आम की फसल का बचाव

आम की फसल के समय भुनगा कीट एक बड़ी समस्या बनते हैं क्योंकि पूरे वर्ष नम वातावरण एवं बारिश से आम की फसल पर आम का फुदका कीट बहुत तेजी से फैलता है। मुख्य रूप से आम का फुदका कीट पूरे भारतवर्ष में अधिक नुकसान पहुँचाने वाला कीट है इसकी तीन जातियाँ पायी जाती हैं। आईडियोसेरस ऐटकिन्ससोनाई, आईडियोसेरस क्लाईपिएलिस एवं आईडियोसेरस नीवियोस्पार्सस प्रमुख है। यह कीट दरारो या पौधों की छाल के नीचे छिपे होते हैं तथा यह कीट पत्तियों के निचली सतह पर अधिक पाये जाते हैं। प्रमुख रूप से यह कीट आम के अलावा नींबू की जातियाँ तथा फाईकस एवं सपोटा में भी पाये जाते हैं।

आम की फसल पर या बहुत विनाशकारी कीट है इनके द्वारा होने वाली क्षति का अनुमान विभिन्न राज्यों में 30 से 100% तक लगाया जाता है यह कीट आम की फसल को तीन प्रकार से क्षति पहुँचाते हैं।

1. इस कीट की मादा बौर वाली शाखाओ व फूलों में बड़ी संख्या में अण्डे देती हैं जिससे उनके तन्तुओं को भारी छति पहुँचती है और वह सुख कर गिर जाते हैं।

2. इस कीट के निम्फ व पौढ़ बड़ी संख्या में पौधों की पंक्तियो मुलायम टहनियो एवं फूलों से रस चूसते हैं जिसके परिणाम स्वरुप पौधों की बढ़वार रुक जाती है फूल सूख कर झड़ जाते हैं फलों की संख्या बहुत कम हो जाती है छोटे फलों के डण्ठलों का रस चूसने की वजह से वह भी गिर जातेहैं।

3. यह कीट पत्तियों की सतह पर एक प्रकार का रस स्रावित करते हैं जिसे मधुश्राव कहते हैं यह खाने योग्य नहीं होता। इससे पत्तियों के पृष्ठ भाग पर फफूंदी उग जाती है यह फफूँदी पौधों को भोजन बनाने में बाधा पहुँचती है परिणाम स्वरुप पौधों पर फूल कम लगते हैं और छोटे-छोटे बटन जैसे फल झड़ जाते हैं। मुख्य रूप से इस कीट की मादाएँ अपने अडंरोपक से पत्तियों की मध्य शिराओं फूलों के डण्ठलों तथा फूलों में छेद करके

150 से 300 तक अण्डे एक-एक करके अलग-अलग देती हैं अण्डों से 15 से 20 दिन के बाद नित्य तैयार हो जाते हैं और बसन्त कालीन जीवन चक्र फरवरी से अप्रैल तक और ग्रीष्मकालीन जीवन चक्र जून से अगस्त तक पाया जाता है। यह अपना जीवन शीतकाल में पौधों की छाल के नीचे छिपकर व्यतीत करते हैं यह नमी और छायादार स्थान अधिक पसन्द करते हैं ऐसे बागों में जो ज्यादा घने होते हैं और जिनमें पानी भरा रहता है इन कीटों का प्रकोप अधिक होता है यदि इनके प्रकोप के समय बादल रहते हैं और पुरवाई हवा चलती है तो इस कीट का अधिक प्रकोप होता है।

पिछले दो महीने से मौसम में काफी नमी है जिससे भुंनगा कीट बहुत तेजी से बढ़ रहा है। किसानों को सलाह दी जाती है कि बुप्रोफेज़िन (15%) नामक कीटनाशक एक ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से प्रयोग करना चाहिए यह एक अच्छा कीट वृद्धि नियामक (IGR) जो काइटिन संश्लेषण को रोकता है, जिससे निम्फ वयस्क कीटों में परिवर्तित नहीं हो पाते। और धीरे-धीरे कीट मर जाते हैं। इस वृद्धि नियामक के साथ में 1.5 एम एल एसिफेट 35% नामक ऑर्गेनोफॉस्फेट कीटनाशक जो एसिटाइलकोलिनेस्टेरेज को रोकता है, जिससे निम्फ एवं वयस्क कीटों मृत्यु हो जाती है। छिड़काव करते समय यह अवश्य ध्यान रखें की कीटनाशक सदैव रजिस्टर्ड दुकान से खरीदें। कीटनाशक जब छिड़काव करना हो तभी बनाएं। छिड़काव घोल बनाते समय साफ पानी का प्रयोग करें। काफी दिनों से रखी हुई छिड़काव मशीनों की अच्छी तरीके से सफाई करके ही छिड़काव करें। बाग ज्यादा घना नहीं होना चाहिये बाग को साफ रखना चाहिये और उसमें पानी नहीं रुकने देना चाहिये।

(लेखक कीट विज्ञान विभाग, चन्द्रभानु गुप्त स्नातकोत्तर कृषि महाविद्यालय बक्शी का तालाब, लखनऊ के विभागाध्यक्ष हैं।)

मित्र-द्रोह का फल

दो मित्र धर्मबुद्धि और पापबुद्धि हिम्मत नगर में रहते थे। एक बार पापबुद्धि के मन में एक विचार आया कि क्यों न मैं मित्र धर्मबुद्धि के साथ दूसरे देश जाकर धनोपार्जन करूँ। बाद में किसी न किसी युक्ति से उसका सारा धन ठग-हड़प कर सुख-चैन से पूरी जिन्दगी जीऊँगा। इसी नियति से पापबुद्धि ने धर्मबुद्धि को धन और ज्ञान प्राप्त होने का लोभ देते हुए अपने साथ बाहर जाने के लिये राजी कर लिया।

शुभ-मुहूर्त देखकर दोनों मित्र एक अन्य शहर के लिए रवाना हुए। जाते समय अपने साथ बहुत सा माल लेकर गये तथा मुँह माँगे दामों पर बेचकर खूब धनोपार्जन किया। अन्ततः प्रसन्न मन से गाँव की तरफ लौट गये।

गाँव के निकट पहुँचने पर पापबुद्धि ने धर्मबुद्धि को कहा कि मेरे विचार से गाँव में एक साथ सारा धन ले जाना उचित नहीं है। कुछ लोगों को हमसे ईर्ष्या होने लगेगी, तो कुछ लोग कर्ज के रूप में पैसा माँगने लगेंगे। सम्भव है कि कोई चोर ही इसे चुरा ले। मेरे विचार से कुछ धन हमें जंगल में ही किसी सुरक्षित स्थान पर गाढ़ देनी चाहिये। अन्यथा सारा धन देखकर

सन्यासी व महात्माओं का मन भी डोल जाता है। सीधे-साधे धर्मबुद्धि ने पुनः पापबुद्धि के विचार में अपनी सहमति जतायी। वहीं किसी सुरक्षित स्थान पर दोनों ने गड्ढे खोदकर अपना धन दबा दिया तथा घर की ओर प्रस्थान कर गये।

बाद में मौका देखकर एक रात कुबुद्धि ने वहाँ गड़े सारे धन को चुपके से निकालकर हथिया लिया। कुछ दिनों के बाद धर्मबुद्धि ने पापबुद्धि से कहाः भाई मुझे कुछ धन की आवश्यकता है। अतः आप मेरे साथ चलिये। पापबुद्धि तैयार हो गया। जब उसने धन निकालने के लिये गड्ढे को खोदा, तो वहाँ कुछ भी नहीं मिला। पापबुद्धि ने तुरन्त रोने-चिल्लाने का अभिनय किया। उसने धर्मबुद्धि पर धन निकाल लेने का इल्जाम लगा दिया। दोनों लड़ने-झगड़ते न्यायाधीश के पास पहुँचे। न्यायाधीश के सम्मुख दोनों ने अपना-अपना पक्ष प्रस्तुत किया। न्यायाधीश ने सत्य का पता लगाने के लिये दिव्य-परीक्षा का आदेश दिया।

दोनों को बारी-बारी से अपने हाथ जलती हुई आग में डालने थे। पापबुद्धि ने इसका विरोध किया उसने कहा कि वन देवता गवाही देंगे। न्यायधीश ने यह मान लिया। पापबुद्धि ने अपने बाप को एक सूखे हुए पेड़ के खोखले में बैठा दिया। न्यायधीश ने पूछा तो आवाज आई कि चोरी धर्मबुद्धि ने की है।

तभी धर्मबुद्धि ने पेड़ के नीचे आग लगा दी। पेड़ जलने लगा और उसके साथ ही पापबुद्धि का बाप भी, वो बुरी तरह रोने-चिल्लाने लगा। थोड़ी देर में पापबुद्धि का पिता आग से झुलसा हुआ उस वृक्ष की जड़ में से निकला। उसने वनदेवता की साक्षी का सच्चा भेद प्रकट कर दिया। न्यायाधीश ने पापबुद्धि को मौत की सजा दी और धर्मबुद्धि को उसका पूरा धन दिलवाया।

शिक्षा : मनुष्य का यह धर्म है कि वह ज्यादा लोभ न पाले और उपाय की चिन्ता के साथ अपाय की भी चिन्ता करे।

बाल-प्रश्नोत्तरी

01. हिन्दी के जनक किसे कहा जाता है?
(क) रामधारी सिंह दिनकर
(ख) मुंशी प्रेमचन्द
(ग) महादेवी वर्मा
(घ) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

02. भारतीय संविधान सभा के अध्यक्ष कौन थे?
(क) सरदार पटेल
(ख) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
(ग) डॉ. बी.आर. अम्बेडकर
(घ) जवाहर लाल नेहरू

03. भारत में हरितक्रान्ति के जनक किसे कहा जाता है?
(क) बी.पी. पाल
(ख) के.आर. वर्मा
(ग) नॉर्मन बोरलॉग
(घ) डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन

04. श्वेत क्रान्ति के जनक किसे कहा जाता है?
(क) बी.पी. पाल
(ख) नॉर्मन बोरलॉग
(ग) डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन
(घ) डॉ. वर्गीज कुरियन

05. अन्तरिक्ष विज्ञान के जनक किसे कहा जाता है?
(क) डॉ. विक्रम साराभाई
(ख) सतीश धवन
(ग) ए.पी.जे. अब्दुल कलाम
(घ) डॉ. होमी जहांगीर भाभा

06. परमाणु विज्ञान के जनक किसे कहा जाता है?
(क) सी.वी. रमन
(ख) डॉ. होमी जहांगीर भाभा
(ग) ए.पी.जे. अब्दुल कलाम
(घ) डॉ. विक्रम साराभाई

चरण कमल पर माता तेरे

चरण कमल पर माता तेरे, प्राणों का संगीत निछावर,
अनगिन गुण-सम्पन्न सुतों की, जनम-जनम की प्रीति निछावर,
बलिहारी माँ पंचतत्त्व की, देह तुम्हीं से जो पायी है,
बलिहारी है हृदय-भावना, संस्कृति ने जो सरसाई है।
सकल सुमति पावन श्रद्धा का, अमृतमय, नवनीत निछावर।
जनम जनम की प्रीति निछावर।।1।।

वैभव गौरव और दिव्यता, देख तुम्हारा स्वर्ग अचंभित।
वसुन्धरा की सुरभि वाटिका, तेरे कारण बनी सुगंधित।
शक्ति बुद्धि क्षमता से झंकृत, जीवन के सब गीत निछावर।
जनम जनम की प्रीति निछावर।।2।।

न्यौछावर है सभी कामना, न्यौछावर
सब कर्म साधना।
श्रम-सीकर-कण-हार अर्चना, तन,
मन, धन संस्कार भावना।
आत्म प्रसूत सरस अर्थों से, शब्दों
की गुण रीति निछावर।
जनम जनम की प्रीति निछावर।।3।।

उत्तर : 1.(घ), 2.(ग), 3.(घ), 4(घ), 5.(क), 6.(ख)

चैत्र शुक्ल चतुर्दशी-वैशाख कृष्ण त्रयोदशी : विक्रम संवत्-2083

व्रत-पर्व

02 अप्रैल	हनुमान जयन्ती
05 अप्रैल	संकष्टी चतुर्थी
10 अप्रैल	शीतला अष्टमी, कालाष्टमी
13 अप्रैल	वरूथिनी एकादशी, वल्लभाचार्य जयन्ती
14 अप्रैल	वैशाखी, मेष संक्रान्ति, खर मास समाप्त
15 अप्रैल	मासिक शिवरात्रि, प्रदोष व्रत

स्मरणीय तिथियाँ

01 अप्रैल (जयन्ती)	केशव बलिराम हेडगेवार
03 अप्रैल (पुण्यतिथि)	छत्रपति शिवाजी महाराज, राधेश्याम खेमका
04 अप्रैल (जयन्ती)	माखन लाल चतुर्वेदी
04 अप्रैल (पुण्यतिथि)	सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन "अज्ञेय"
05 अप्रैल (जयन्ती)	गुरु अमरदास
07 अप्रैल (जयन्ती)	पंडित रवि शंकर
08 अप्रैल (पुण्यतिथि)	बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय, मंगल पाण्डे
09 अप्रैल (जयन्ती)	राहुल सांकृत्यायन
09 अप्रैल (पुण्यतिथि)	दुर्गाबाई देशमुख
11 अप्रैल (जयन्ती)	ज्योतिबा फुले, कस्तूरबा गाँधी
11 अप्रैल (पुण्यतिथि)	फणीश्वरनाथ रेणु, विष्णु प्रभाकर
13 अप्रैल (स्मृति दिवस)	जलियाँवाला बाग़ हत्याकांड, खालसा पंथ
14 अप्रैल (जयन्ती)	डॉ. भीमराव आम्बेडकर
14 अप्रैल (पुण्यतिथि)	रमण महर्षि, मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया
15 अप्रैल (जयन्ती)	गुरु नानक, गुरु अर्जन देव, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

पाक्षिक राशिफल

ज्योतिर्विद पं. दिवाकर त्रिपाठी
निदेशक- उत्थान ज्योतिष एवं अध्यात्म संस्थान

मेष राशि-
आर्थिक पक्ष में मजबूती आयेगी। प्रेम आकर्षण में वृद्धि होगा। जीवनसाथी से लाभ की स्थिति बनेगी। सन्तान पक्ष पर खर्च बढ़ेगा। कार्यों में भाग्य का साथ प्राप्त होगा।

वृषभ राशि-
आर्थिक पक्ष में सुधार आयेगा। गृह एवं वाहन पर खर्च बढ़ेगा। जीवनसाथी के स्वास्थ्य को लेकर सामान्य तनाव होगा। व्यापारिक गतिविधियों में सुधार होगा।

मिथुन राशि-
सरकारी तंत्र से लाभ बढ़ेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मनोबल में अचानक कमी आयेगी। व्यापारिक गतिविधियों में वृद्धि होगी। अध्ययन एवं शिक्षा में वृद्धि होगी। दैनिक लाभ में वृद्धि होगी। वाहन की क्षति सम्भव।

कर्क राशि-
सामाजिक दायरे में वृद्धि होगी। कलात्मकता में वृद्धि होगी। घर, गाड़ी एवं अचल सम्पत्ति का लाभ मिलेगा। दूरस्थ यात्रा का योग बनेगा। अति घनिष्ठ व्यक्ति से तनाव बढ़ेगा।

सिंह राशि-
आन्तरिक द्वंद में वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों पर खर्च एवं तनाव में वृद्धि होगी। सन्तान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होगा। क्रोध में अचानक वृद्धि होगी। उच्च अधिकारियों से विवाद या तनाव सम्भव।

कन्या राशि-
मनोबल में कमी महसूस होगी। आर्थिक पक्ष में मजबूती आयेगी । घर एवं गाड़ी के सुख में वृद्धि होगा। क्रोध एवं झल्लाहट में वृद्धि होगी। मानसिक द्वंद में वृद्धि होगी। दैनिक रोजगार में अवरोध होगा।

तुला राशि-
दूरस्थ यात्रा पर खर्च बढ़ेगा। मनोबल में वृद्धि एवं नेतृत्व क्षमता में वृद्धि। जीवन साथी को चोट या ऑपरेशन सम्भव। आँखों की समस्या सम्भव। पैर में दर्द सम्भव। अध्ययन अध्यापन में अवरोध में सम्भव।

वृश्चिक राशि-
गृह एवं वाहन सुख पर खर्च बढ़ेगा। सीने की तकलीफ में वृद्धि होगी। कार्यों में भाग्य का साथ प्राप्त होगा। क्रोध में अधिकता होगी।

धनु राशि-
मानसिक बल में वृद्धि होगी। सरकार सरकारी तंत्र से लाभ की सम्भावना बनेगी। आर्थिक गतिविधियों में सुधार होगा। आलस्य में वृद्धि होगी। उच्च अधिकारी से तनाव की संभावना बनेगी।

मकर राशि-
पराक्रम, पुरुषार्थ, पद, प्रतिष्ठा एवं सम्मान में वृद्धि होगी। नौकरी में वृद्धि एवं परिवर्तन की स्थिति बनेगी। दूरस्थ यात्रा का योग बनेगा। वाणी की तीव्रता में वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों का खर्च बढ़ेगा।

कुम्भ राशि-
आर्थिक पक्ष में मजबूती आयेगी। पेट की समस्या के कारण तनाव बढ़ेगा। पारिवारिक कार्यो पर खर्च बढ़ेगा। क्रोध पर नियंत्रण रखना आवश्यक। मानसिक चिन्तन में वृद्धि होगी।

मीन राशि-
दैनिक आय में वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों पर खर्च बढ़ेगा। दूरस्थ यात्रा का योग बनेगा। पेट की एवं आन्तरिक समस्या के कारण तनाव होगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा एवं नौकरी में परिवर्तन सम्भव।

श्रीराम यन्त्र स्थापना महोत्सव

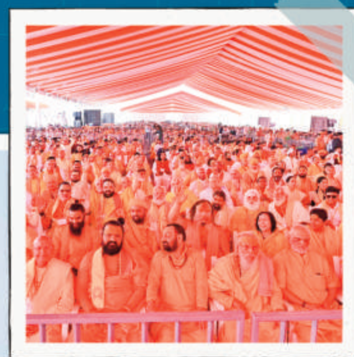

"प्रभु श्रीराम ने इस अयोध्या नगरी में जन्म लिया इसकी पवित्र धूलि का स्पर्श करना मेरे लिए अत्यन्त सौभाग्य का विषय है।"

• राष्ट्रपति मुर्मू